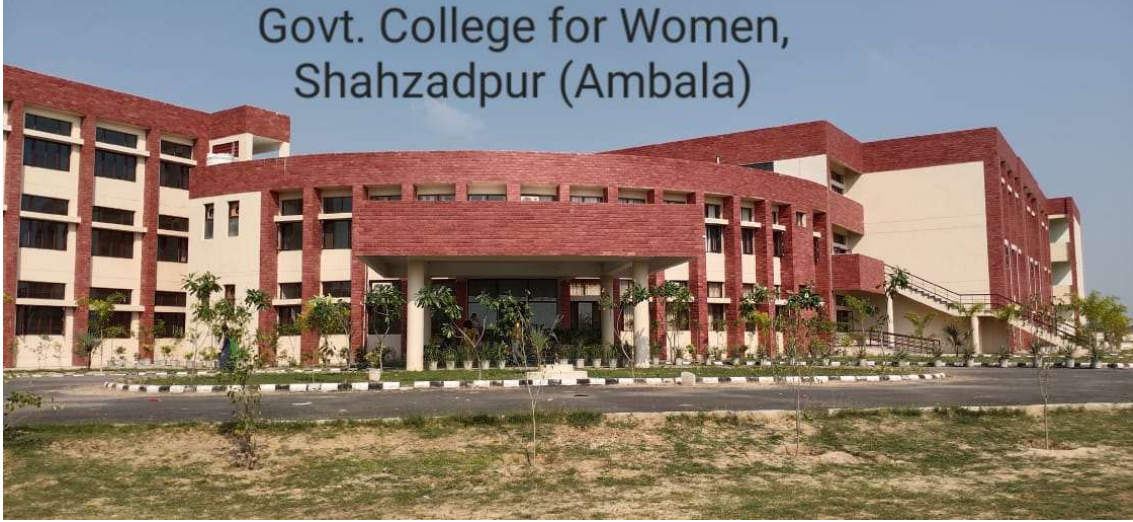


राजकीय महिला महाविद्यालय ,शहजादपुर(अम्बाला)

“प्रतिबिम्ब”



राजकीय महिला महाविद्यालय, शहजादपुर

सत्र:2021-22



From the Principal's desk



I am glad to find the 3rd Annual issue of our College e-Magazine 'PRATIBIMB' in your hands. I can proudly say that our college has been doing excellently well in all fields of education ever since its inception in the session 2018-19. It has been showing notable academic prosperity and trying to recover new turf to meet the demands of time. The present issue of our magazine serves as a window through which one can peep into various curricular, co-curricular and extra-curricular activities of our College and its achievements on various fronts.

Education these days has taken to new wings. It is invading new fields of innovations and technologies. Our College is consistently expanding its infrastructure to meet the requirements of the day. We are trying to keep pace with new innovations and technologies besides keeping ourselves abreast with the latest developments in the field of education. We are in the boat of academic surveillance and our effort is to get best out of it. It is our endeavour to stand by our commitment and targets.

Our magazine is an endeavour to encourage the budding writers of the College to show their creative talent. I appreciate the role of our students along with the Editorial Board in bringing out this issue. I am sure that they will keep it up. It is really good of the students to express their thoughts in a free and transparent manner. My sincere thanks are to the staff for their honest efforts in developing the exemplary work- culture among the students. They encourage them and guide them to the right targets.

Finally, my special thanks are to Editorial Board of the Magazine and to each and everybody who has extended his/her contribution in bringing out this issue. I congratulate one and all on this occasion.

With Best Wishes

(MS RAJNI BHALLA)

Principal

संपादकीय

किसी भी महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रतिबिंबित करने का एक मंच होता है। यहाँ पर पढ़ने वाले सभी विद्यार्थी को अपने मन की बात उकेरने का एक सुनहरा अवसर मिलता है जिसके माध्यम से वो अपने मन में उठने वाले विचारों को लिख सकते हैं। राजकीय महिला महाविद्यालय शहजादपुर (अम्बाला) की इस ई-संस्करण (मैगज़ीन) आप सभी के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त खुशी हो रही है क्योंकि इस मैगज़ीन में हिंदी अनुभाग, अंग्रेजी अनुभाग, पंजाबी अनुभाग, संस्कृत अनुभाग और वाणिज्य अनुभाग आदि से अनेक छात्राओं ने अपने मन के विचार इस मैगज़ीन में प्रस्तुत किए हैं। यहां पर कोई भी अपने विचारों को रख सकता है, किसी भी महाविद्यालय की शान वहां के विद्यार्थी होते हैं। कई बार ये विद्यार्थी छोटी छोटी बातों में बहुत बड़ी सीख दे जाते हैं। मैं सभी विद्यार्थियों की रचनाओं को देखकर बहुत खुश हुई कि उन्होंने अपने विचारों को इस मैगज़ीन में प्रस्तुत किया है। महाविद्यालय की इस पत्रिका के माध्यम से सभी विद्यार्थियों को एक ऐसा मंच प्रदान करना है जिससे वे अपने मन में उठने वाले परिपक्व और अपरिपक्व विचारों को प्रस्तुत कर सकें। इस पत्रिका को प्रकाशित करने में किये गए प्रयासों के लिए मैं महाविद्यालय प्राचार्या, सभी विद्यार्थियों, संपादकीय समूह को धन्यवाद करती हूँ।

डॉ. गीता देवी
मुख्य संपादकीया

INDEX

Sr.No.	TITLE
1.	College at Glance
2.	Message by Principal
3.	Our Faculty
4.	Memorable Events
5.	Hindi
6.	English
7.	Sanskrit
8.	Punjabi
9.	Commerce
10.	Social Sciences

COLLEGE AT A GLANCE

Established in 2018, Govt. College for Women, Shahzadpur(Ambala) is affiliated to KUK. With a sprawling campus of 09 acres, the college is surrounded by hills and greenery which provides a visual feast. Presently being run in Senior Secondary Govt. School, Shahzadpur, College boasts of a spacious building having more than 20 class rooms, various labs, multipurpose hall, cafeteria and other facilities. In this Session College has a total admission of 230 girls. It is at present running BA and B.Com,M.Com & B.Com C&V (I) ,B.Sc (N.M) & B.Sc. I (CS). The institute aims to empower girl students not only in academic way but also targets their overall grooming. The college has the privilege of bagging many prizes at District, Zonal and Divisional Level.

Though new college, still the college is first one to upload AISHE data on MHRD portal. College has been registered with NAAC and SHREYAS (Scheme for Higher Education Youth for Apprenticeship and Skills). The IQAC has been formed and a meeting has already been held.

***VISION:-** Our Vision is to create a generation with good moral values, high cultural values, who take pride for being Indian; able to learn and align these qualities with the changing world to have a successful future; following our logo **श्रद्धावान् लभते ज्ञानं**.*

***MISSION:-** Our Mission is to impart quality education to develop lawful, balanced citizens with humanistic approach, who can serve nation and globe with their analytical knowledge and multi-skilled personality.*

MEMORABLE EVENTS:-

In this year our college organised Talent Show Competition on dated 26 & 27 November 2021 which provide good platform to students to sharpen their talent. A Tree Plantation drive was organised in the college under the supervision of college principal Rajni Bhalla to increase the greenery of the campus. A one week Yoga & Nutrition Workshop was organised by Women Cell to rise the health status of the girls students.our college participated in 19 events during zonal youth festival held at MDSD Girl College Ambala City on dated 23 to 25 December 2021 and got a postion in 7 events.A One Day College level Seminar was organised by this college on dated 26 October 2021 .

OUR FACULTY-

TEACHING STAFF-

Sr.No.	NAME	Designation	Department
1.	Mr.Anil Saini	Associate Professor	Chemistry
2.	Dr.Kashmir Singh	Associate Professor	Punjabi
3.	Mrs.Monika	Assistant Professor	Commerce
4.	Dr.Pankaj Kumar	Assistant Professor	Computer science
5.	Mrs. Vaneeta Sharma	Assistant Professor	Political science
6.	Dr. Geeta Devi	Assistant Professor	Sanskrit
7.	Mrs.Ashu	Assistant Professor	Commerce
8.	Mr.Rajat Soni	Assistant Professor	Public Administration
9.	Dr. Raj Kumari	Assistant Professor	Physics
10.	Mr.Rajesh Kumar	Assistant Professor	History
11.	Mrs.Aarti Saini	Assistant Professor	Maths
12.	Dr. Punam	Assistant Professor	Economics
13.	Mr. Ravi Kumar Barwal	Assistant Professor	Computer science
14.	Ms. Shivani	Assistant Professor	Commerce
15.	Ms.Natasha	Assistant Professor	Maths
16.	Dr. Yogita Sarohi	Assistant Professor	Commerce
17.	Dr. Nirmal Singh	Assistant Professor	Hindi
18.	Dr.Yash Pal	Assistant Professor	English
19.	Mr. Raj Kumar	Assistant Professor	Geography
20.	Dr. Nandini	Assistant Professor	Psychology
21.	Ms.Suman	Assistant Professor	Sociology

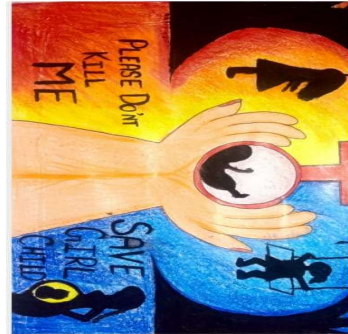
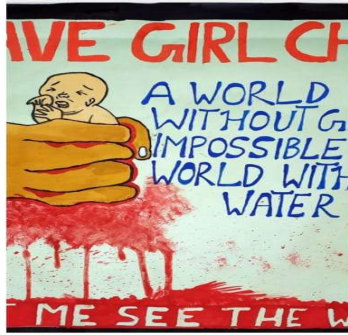
NON-TEACHING STAFF

Sr. No.	Name	Designation
1.	Ms Rajni Bhalla	Principal
2.	Ms. Manisha	Clerk
3	Mr. Ramsharan	Steno
4.	Ms. Neeru	Data Entry Operator
5.	Mr. Bala Ram	Lab. Attendant
6.	Ms. Neha	Restorer
7.	Mr. Anil Kumar	Peon
8.	Mr. Balinder Singh	Chowkidar cum Peon
9.	Mr. Vijay Kumar	Chowkidar
10.	Mr. Arvind	Chowkidar
11	Ms. Jaswanti	Sweeper
12	Mr. Gaurav Kumar	Sweeper cum Mali
13	Mr. Arvind	Sweeper cum Mali

NSS ACTIVITIES



WOMEN CELL ACTIVITES



RED CROSS SOCIETY ACTIVITIES



FACULTY DEVELOPMENT PROGRAMME



हिंदी अनुभाग

सम्पादक की कलम से

वर्तमान समय में कोरोना महामारी के कारण साहित्य व साहित्यिक पत्रिकाओं के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन हुआ है। महाविद्यालय की पत्रिका यह इस ई-संस्करण आप सभी की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। हिंदी अनुभाग में छात्राओं ने अपनी बहुत-सी गद्यात्मक और पद्यात्मक रचनाएं प्रस्तुत की हैं। उन रचनाओं को विवेचित करने के पश्चात कुछ रचनाओं को प्रकाशन के लिए भेजा गया है। सभी रचनाओं को देखकर ऐसा जरूर लगा कि छात्राएं साहित्य की किसी न किसी विधा में अपने मनोभावों को प्रकट करना चाहती हैं। साहित्य की सबसे बड़ी खूबी भी यही है कि कोई भी अपनी मनःस्थिति इसके माध्यम से अभिव्यक्त कर सकता है। किसी के लिए भी परिपक्वता और अपरिपक्वता का कोई बंधन इसमें नहीं है। महाविद्यालय की पत्रिका के माध्यम से सभी छात्राओं को एक ऐसा मंच प्रदान करना है जिससे वे अपनी अल्हड़ अवस्था के अनघड़े विचारों को प्रस्तुत कर सकें। छात्राएं ऐसा करने में सफल भी हुई हैं। इसके लिए उन्हें बधाई व शुभकामनाएं।

डॉ. निर्मल सिंह
सम्पादक, हिंदी अनुभाग

छात्रा संपादकीय

सबसे पहले मैं महा विद्यालय की वार्षिक पत्रिका के हिंदी अनुभाग की छात्रा संपादक बनने पर महाविद्यालय के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। इस पत्रिका के लिए जिन छात्राओं ने अपनी कविताएं, लेख और विचार आदि प्रस्तुत किए हैं निश्चित ही सभी बधाई की पात्र हैं। यह पत्रिका हम सभी लड़कियों के लिए बहुत लाभकारी है। इसके द्वारा हम अपने मन के विचारों को प्रस्तुत कर सकती हैं। जिन छात्राओं ने इस पत्रिका में अपनी रचनाएं दी हैं, उन्होंने अपने विचारों को एक प्रकार से पंख दिए हैं, जो इस पत्रिका के माध्यम से उड़ेंगे।

मौसम रानी
बीए द्वितीय वर्ष
छात्रा सम्पादक

कविता

दिल के लफ़्ज़

कह दो तो सिर्फ़ कहानी हूँ मैं,
 रोक पाए न जिसको यह सारी दुनिया,
 वह एक बूंद आंख का पानी हूँ मैं॥
 सबको प्यार देने की आदत है हमें,
 सब पर विश्वास करने की आदत है हमें,
 अपनी अलग पहचान बनाने की चाहत है हमें॥
 प्यार, विश्वास जैसे शब्द लोगों के खेल बनते जा रहे हैं,
 हम जैसे शख्स इन खेलों के खिलाफ़ बनते जा रहे हैं॥
 मन में ख़्वाब भी रोने ही निकली थी,
 कि समझा दिया दुनिया ने,
 हमारे ख़्वाबों का संसार ही गलत है॥
 मैं पूछती हूँ क्यों यह मेरे 'अल्फाज' गलत हैं,
 क्या मैं गलत हूँ?
 या यह जग संसार गलत है?
 सवालों का समंदर गहराता जा रहा है,
 जवाबों की नदियों में एक बूंद भी ना आ पा रहा है,
 हमारी यह नदियां प्यासी ही ना रह जाए यारो,
 प्यास बुझाने का कोई जरिया तो बता दो॥
 जो समझ ना सके मुझे उनके लिए 'कौन'
 जो समझ गए उनके लिए खुली किताब हूँ मैं,
 आंख से देखोगे तो खुश पाओगे,
 दिल से पूछोगे तो दर्द का सैलाब हूँ मैं॥
 अगर रख सको तो एक निशानी,
 खो दो तो सिर्फ़ एक कहानी हूँ मैं॥

रेशमा कुमारी

बीकॉम सीए वी द्वितीय सेमेस्टर,

रोल नंबर 121 00 510 39 006

मतदान

बदलाव का दौर है, तो खुद से बदलाव करो,
 राष्ट्रीय प्रेम को दिखाओ और मतदान की शुरुआत करो।
 आम आदमी की पहचान भी मतदान से है,
 और लोकतंत्र की शुरुआत भी मतदान से है,
 इस सफर पर हम युवा भी चलो साथ साथ चलते हैं,
 आओ मिलकर बदलाव करते हैं मतदान से शुरुआत करते हैं।।
 रिश्ते परिवार यह भी जरूरी हैं,
 पर मतदान के बिना लोकतंत्र की कहानी अधूरी है,
 वोट बूथ तक आओ साथ साथ चलते हैं,
 इस कहानी को अपना नैतिक कर्तव्य समझकर पूरा करते हैं,
 आओ मिलकर बदलाव करते हैं मतदान से शुरुआत करते हैं।।
 महंगाई और भ्रष्टाचार को समाज से साफ करते हैं,
 चलो हम इस गरीबी पर भी विचार करते हैं,
 मतदान कर हम अपने लोकतंत्र का सम्मान करते हैं,
 आओ मिलकर बदलाव करते हैं मतदान से शुरुआत करते हैं,
 मतदान से शुरुआत करते हैं।।

दीपिका

बीकॉम सीएवी सेकंड सेमेस्टर
 रोल नंबर 12100 510 3900 4

शहर

इंसान ने शहर को तोड़कर,
 एक घर बना लिया,
 अपनों को छोड़कर,
 गैरों को अपना लिया,
 औरों की खोज में स्वयं को गवा दिया,
 एक की गलती ने हजारों को मिटा दिया,
 कल की चाह में आज को भुला दिया,
 इस कलयुग ने इंसान को इतना गिरा दिया,
 इंसान ने शहर को तोड़कर एक घर बना लिया।।

आशु देवी

बीए प्रथम वर्ष

रोल नंबर 121 00 51 00 204 5

प्रेरणादायक शायरी

उड़ान तो भरनी है चाहे कई बार गिरना पड़े,
 सपनों को पूरा तो करना है,
 चाहे खुद से लड़ना पड़े।।
 अगर आप कुछ सोच सकते हैं,
 तो यकीन मानिए, आप उसे कर भी सकते हैं।
 खुद की सेल्फी लेने से अच्छा है,
 खुद को ऐसा बनाओ कि लोग आपके साथ सेल्फी लें।
 सफलता मिले या ना मिले,
 यह तो किस्मत की बात है,
 पर हम कोशिश भी ना करें यह तो गलत बात है।
 ना थके अभी पैर ना कभी हिम्मत हारी है,
 हौसला है जिंदगी में कुछ कर दिखाने का इसलिए अभी सफर जारी है।
 काम करो ऐसा कि पहचान बन जाए,
 काम करो ऐसा कि एक पहचान बन जाए,
 हर कदम ऐसा चलो कि निशान बन जाए।

संजना देवी
 बीए द्वितीय वर्ष
 रोल नंबर 12000 5 00 21 21

बेटी

मिलनी है जन्नत जिन्हें उनको मिली है बेटियां,
 बाग सुना रहा जिनका बनकर खिली है बेटियां,
 बोझ जो समझे उन्हें और रास्ते का कांटा भी!
 पिता की मजबूरी देख ढलती गई है बेटियां
 मां-बाप के तंग हाल में भी ढलती गई है बेटियां,
 इच्छा कबूल मां-बाप की कर दी गई है बेटियां,
 मांगना कुछ भी नहीं बस मां बाप की सेवा करती रही हैं बेटियां,
 सदा घर की इज्जत के लिए मरती गई है बेटियां।

सतविंदर कौर
 रोल नंबर 156

हमारी प्रकृति

सोचा कभी उस प्यारे से बंधन,
 नाजुक सी कलियों, मां के स्पर्श,
 अनकहे बचपन के एहसास को,
 सींचा जिसने हमें और तुम्हें,
 भूल गए क्या तुम?
 सोचो कौन है वह,
 जिसे हम कुछ ना दे सके,
 दिया उसे सिर्फ दर्द,
 जिससे छीन ली उसकी जिंदगी,
 वह है हमारी प्रकृति।
 तपती धूप से बचाया जिसने,
 फुटपार्थों से घर तक लाया,
 उसे खत्म कर डाला हमने,
 वह है हमारी प्रकृति।
 दो वक्त का भोजन दिया
 और दिया जो था उसके पास
 हम तो कुछ ना दे सके उसे
 दिया तो उसे सिर्फ दर्द,
 वह है हमारी प्रकृति।
 मत काटो इन नन्हें पौधों को,
 है यह हमारी संस्कृति,
 छाया भरी जीवन मिले जिससे,
 वह है हमारी प्रकृति।

सुमन
 क्लास बीए तृतीयवर्ष
 रोल नंबर 38

प्रेरक वाक्य

अन्याय से लड़ते हुए आप की मौत हो जाती है,
 तो आपकी आने वाली पीढ़ियां उसका बदला जरूर लेंगी।
 और अगर अन्याय सहते हुए आप की मौत हो जाती है,
 तो आपकी आने वाली पीढ़ियां भी गुलाम बनी रहेंगी।

मीनाक्षी
 बीए द्वितीय वर्ष
 रोल नंबर 12000 500 2027

माँ

जिसने मुझे बनाया,
 हर दर्द को सहकर,
 इस दुनिया में बुलाया वह है मां।
 जिसने मुझे चलना सिखाया,
 जिंदगी के हर गम को,
 खुशी खुशी अपना बनाया वह है मां।
 धूप में खुद है जलती रही,
 मगर आंचल की छांव में,
 जिसने मुझे छुपाया वह है मां।
 फिर क्यों इस दुनिया में मां को भूल जाते हैं,
 कामयाबी अपनाते ही मां का साथ छोड़ जाते हैं,
 ईश्वर को पूजते हैं,
 पर भूल जाते हैं कि धरती पर ईश्वर का जो रूप है,
 वह है मां।

सावित्री चौहान
 बीए. तृतीय वर्ष
 रोल नंबर 36 48220 065

बचपन

एक बचपन का जमाना था,
 जिसमें खुशियों का खजाना था,
 तमन्ना चांद को पाने की थी,
 पर दिल तितली का दिवाना था।
 थक कर आना स्कूल से,
 पर खेलने भी तो जाना था,
 मां की कहानी थी परियों का फसाना था,
 बारिश में कागज की नाव थी हर मौसम सुहाना था।
 रोने की वजह न थी,
 ना हंसने का बहाना था,
 फिर क्यों हो गए बड़े हम,
 इससे अच्छा तो वह बचपन का जमाना था।

प्रीति चौहान
 बीए तृतीय वर्ष
 रोल नंबर 55

आत्मविश्वास

दिन में सूरज है अगर,
तो रात को भी चांद तारे हैं,
पर जीत तो वे लोग भी सकते हैं,
जो कभी हारे हैं।
कभी धूप कभी बारिश,
यह तो कुदरत के नजारे हैं,
पर प्यासे तो वे लोग भी हैं,
जो समुद्र के किनारे हैं।
कुछ ना कह सके तो कहते हैं,
हम तो किस्मत के सहारे हैं,
पर जान न सके तुम खुद को,
कि कितने रूप तुम्हारे हैं।
हिम्मत और हौसला हो अगर,
तो रास्ते कई सारे हैं,
पर जीत तो वे लोग भी सकते हैं,
जो कभी हारे हैं।
जो लोग वक्त के साथ ढल नहीं सकते,
वह लोग अपनी किस्मत बदल नहीं सकते,
गिर जाते हैं राह पर पत्थरों की तरह,
कौन कहता है कि वे लोग फिर चल नहीं सकते।

सिमरनजीत कौर
बीए तृतीय वर्ष
रोल नंबर 25

मां याद आता है

जोर से रोने पर मां का भाग कर आना याद आता है,
चोट लगने पर मां शब्द ही याद आता है।
तेरा वह लोरी गाकर सुनाना आंचल में छुपाना याद आता है,
खाना बनाकर खुद से पहले दूसरों को खिलाना याद आता है।
गुस्सा होकर भी प्यार करना याद आता है,
कहते हैं मां के कदमों में जहान है पर मां में ही भगवान है।

गुरलीन कौर
बीए प्रथम वर्ष
121 00 5100 20 79

पापा

रातों की नींदें उड़ा कर जो गुपचुप सोते हैं,
 किसी दर्द में हो कर भी,
 बच्चों को मुस्कुरा कर बहलाते हैं।
 खुद फटे हुए कपड़े पहनकर,
 बच्चों के लिए नए सिलवाते हैं।
 खुद के मुंह से निकालकर,
 बच्चों का पेट भरते हैं।
 अपने सपनों को मारकर,
 बच्चों के सपनों को चमकाते हैं।
 चोट लगने पर भी कुछ नहीं हुआ,
 कहकर चुप करते हैं।
 और अच्छे पिता होने का फर्ज निभाते हैं।

गुरप्रीत कौर
 बी ए प्रथम वर्ष
 रोल नंबर 1210051 00 2070

मेरे पापा

मेरे प्यारे प्यारे पापा,
 मेरे दिल में रहते पापा,
 मेरी छोटी सी खुशी के लिए,
 सब कुछ सह जाते हैं पापा,
 मेरे प्यारे प्यारे पापा,
 मेरे दिल में रहते पापा।
 पूरी करते हर मेरी इच्छा,
 उनके जैसा नहीं कोई अच्छा,
 मेरे प्यारे प्यारे पापा,
 मेरे दिल में रहते पापा।
 मां मेरी जब भी डांटे,
 मुझे दुलार दे मेरे पापा,
 मेरे प्यारे प्यारे पापा,
 मेरे प्यारे प्यारे पापा।

सावित्री
 बीए प्रथम
 12100 5100 2001

प्रश्न परिंदों से

प्रश्न परिंदों से-

नीला आसमान, ऊपर परिंदों का संसार, लंबी उड़ान भरी है,

तुमने कहाँ जाना है? क्या इस संसार से नहीं हो तुम?

क्या खोया तुम्हारा? जिसे ढूँढ रहे हो?

तुम उत्तर परिंदों का-

नहीं यह संसार हमारा है, नहीं हमने कोई उड़ान भरी है।

हम संतुष्ट भी हैं और सुखी भी,

ना कुछ खोया हमारा और ना ही हम ढूँढ रहे हैं।

इस सांसारिक मोह माया से दूर, हम रह रहे हैं,

कर्तव्य बिना हम कभी रह नहीं सकते।

बिना यत्न कर, हम भोजन नहीं पाते,

तो कैसे रहें हम खाली क्योंकि कर्म ही हैं हमें अमर बनाते।

सुनीता

बीए प्रथम वर्ष

रोल नंबर 12100 510 02115

अमीरी और गरीबी

हमारे समाज में अनेक प्रकार की जातियों के लोग रहते हैं। उनमें कहीं तो ऊंची जाति हैं और कहीं नीची जाति। समाज कई वर्गों में बांटा है। ऐसा नहीं है कि यह वर्ग अलग-अलग स्थान पर रहते हो। यह वर्ग एक साथ रहते हैं, लेकिन फिर भी यह आपस में एक दूसरे से घृणा करते हैं। ऊंची जाति के लोग नीची जाति के लोगों को मनुष्य ही नहीं समझते। यह उनके बच्चों में भी मतभेद करते हैं। उनकी जाति के बच्चे निम्न जाति के बच्चों को पसंद नहीं करते हुए उनके साथ बैठने से भी कतराते हैं। निम्न जाति के बच्चे ऊंची जाति के बच्चों की अमीरी के नीचे दब कर रह जाते हैं। यह अपनी पहचान नहीं बना पाते और अपने सपनों को भी पूरा नहीं कर पाते।

हमारे समाज में निम्न वर्ग के साथ शुरू से ही अत्याचार होते रहे हैं। वर्तमान में भी हमें देखने को मिलता है कि ऊंची जाति के लोग अपने बच्चों के सपनों को पूरा करने के लिए रिश्वत का सहारा लेते हैं। वही काबिल वह गरीब परिवारों के बच्चे अपने सपनों के लिए तरसते रहते हैं। ल उनके पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए इतना धन नहीं होता कि वह ज्यादा से ज्यादा पढ़ सके। हमारे समाज में अमीरी और गरीबी एक ऐसी बीमारी बन गई है जिसका इलाज किसी डॉक्टर के पास नहीं है। अपितु मनुष्य की सोच में है। जब तक इंसान अपनी सोच को ऊंचा नहीं करता तब तक किसी भी समाज का विकास नहीं हो सकता।

महक धीमान

बीए प्रथम

रोल नंबर 121 005100 2103

वक्त

यह वक्त तुम्हारा है, सपने भी तुम्हारे हैं,
 और इन्हें पूरा भी तुम्हें करना है।
 माना मगर थोड़ा मुश्किल है, मगर नामुमकिन तो नहीं,
 करना यही है, समय यही है।
 चाहे तो सोना बना लो, या सोने में बिता दो।
 चल उठ चल तू, मंजिल की तरफ बढ़ चल तू।
 तेरे खून में है चिंगारी, क्या करेगी तेरी बीमारी।
 देखती रह जाएगी दुनिया सारी, तू तो है खतरो का खिलाडी।
 चल उठ चल तू, मंजिल की तरफ बढ़ चल तू।

प्रिया सैनी

बीए प्रथम वर्ष

रोल नंबर 12100 5100 2091

कुदरत कुछ कह रही है

आज दुनिया भर में हम जितनी परेशानियां देख रहे हैं। ऑक्सीजन की कमी, पानी की कमी, पर्यावरण में प्रदूषण, बाढ़, भूकंप, ऊपर से डिप्रेशन, एंजायटी, फोबिया जैसी बीमारियां बहुत आम बन चुकी हैं। यह सब यू ही नहीं है बल्कि इसके पीछे जो वजह है जिसे हम नजरअंदाज करते हैं। वह यह है कि जो नुकसान हम इस प्रकृति का कर रहे हैं वह सब वापस हमें ही लौट आ कर मिल रहा है। कभी बीमारी बनकर तो कभी अलग-अलग परेशानियां बनकर और इन सब को लेकर जैसे हालात हैं इस दुनिया की आज उसे देखकर हमें समझ जाना चाहिए कि कुदरत कुछ कह रही है।

हमसे वह सब जो हमें मिलता है मां प्रकृति से उस प्रकृति को बने रहने के लिए हम उसे यूँ बर्बाद ना करें। क्योंकि प्रकृति से ही हमारा वजूद है अगर प्रकृति नहीं तो हम भी नहीं। हां हम जानते हैं तो सब हैं कि कितना कुछ दिया कुदरत ने हमें, मगर उसकी कदर नहीं है। इसीलिए लोग बेवजह पेड़ों को काट रहे हैं। अपनी जुबान के स्वाद के लिए बेजुबान मासूमों का कत्ल कर रहे हैं, और इतना ही नहीं मिट्टी से लेकर हवाओं, नदियों तक को अपने ही कचरे से गंदा कर रखा है तभी तो आज कुछ भी साफ स्वच्छ नहीं है। हर चीज में मिलावट है, क्यों लालच में इंसान इतना अंधा हुआ जा रहा है। क्या इतनी जल्दी भूल गए कि कैसे तड़प रहे थे हम ऑक्सीजन के लिए कोरोना तो सिर्फ एक ट्रेलर था। मगर अभी भी अगर हम नहीं सुधरे, ना तो भविष्य में हमें कुदरत के भयानक कहर को देखना पड़ेगा आने वाले समय में कुदरत तो होगा लेकिन इंसान नहीं रहेगा। आज कुदरत को हमारी जरूरत है उसे पहले जैसा साफ स्वच्छ बनाने की फिर क्यों हम अपनी जिम्मेदारियों से मुंह फेर रहे हैं। हम पेड़ लगाने की बात कम और फालतू चीजों की बात ज्यादा करते हैं। जब तक हवा पानी बिकने न लग जाए तब तक इसकी कीमत पता कहां चलती है। अब हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम अपनी प्रकृति को साफ सुथरा बनाएं।

मोनिका

बीए तृतीय वर्ष

रोल नंबर 36 48220 12

English Section

Teacher as a Role Model

Sources of our knowledge are so diverse that we are only beginning to think about their complexity. Our impulse to look, enumerate, classify and evaluate these sources is constantly alive whether we are conscious of it or not. A child, when it opens to the world its senses, finds itself in completely unintelligible, alien world which gradually becomes a world that it tries to comprehend and then master, control and manipulate.

During this process of growth the child is gorging upon so many forms of knowledge from so many sources that to find a single individual human person embodying and concentrating the various and scattered sources of knowledge comes as a relief to the child. The experience of learning and socialization can be now articulated into and from the single human individual who may or may not answer all its questions. Once the child has discovered this kind of single source, the complexity of life, particularly nowadays when the child's attention is stolen by virtual games industry and other entertaining distractions, for the first time in her life perhaps, becomes enjoyable and not merely an unfolding challenge and psychologically confusing. All the childish curiosities that are going to grow into more complex moral questions can now flow between the pupil and the other human, which we can now call with some hesitation, a teacher, with still more hesitation, a teacher who is a role model.

The impulse to seek models is embedded in the desire to know and comprehend and do so in simplified way. The first principle that binds the pupil to the teacher is the trust. If the trust is missing, the first doubt, qualm, or question will be directed in some other more trusted direction. The knowledge that the teacher imparts or the direction to which the teacher points may falter but the trust can not. The trust can falter if the promise of knowledge is absolute. More sure the teacher is about the knowledge s/he possesses less is s/he like to survive the trust test because knowledge is ever expanding in details of facts and interpretations. In this age when the facts can be checked and verified swiftly, it is harder and harder for a teacher to stay abreast of the facts and their relevance. So comes the humbleness and humility, as the second principle, in the promise of knowledge.

The application of humbleness, however, cannot immune the teacher from the need to stay updated with the ever galloping domains of knowledge. Take an example to understand the domains and disciplines and their relationship with knowledge: an Arabic or Sanskrit language teacher, however steeped in her domain knowledge, cannot, knowingly or unknowingly, refuse or refute the laws of evolution which are firmly established since Darwin and revalidated by later scientists. So one domain's knowledge is to be kept at a steady high level to which the teacher belongs whereas the general knowledge level of other domains must not fall below a threshold to keep the strength of the trust bond between the teacher and the pupil. We can call this principle as the awareness principle—the daunting need to stay contemporary and relevant. So a teacher, as an embodiment of sources of knowledge, needs to keep earning and holding the trust through ever updating herself and ever feeling the imperfection in doing so and thus stays humble. Humbleness is more natural and profound when a teacher understands that the next generation is surely, not just likely, to surpass standards set by her own. And one of her pupils, from one class or another, is likely to shine more than the rest, including her or her peers. The consequent pride that she was instrumental in bringing out the coming generation and its luminous minds is her secret pleasure and motivation to go on.

Pursuit of knowledge for its own sake has its pleasures but when it is given further impetus by the student community of seekers who appreciate the pursuit is a bonus cause of jubilation for

the teacher. This can also lead to an axiom that those who are not interested in pursuit and dissemination of knowledge have no business to become teachers.

The knowledge includes the skills necessary for survival in a vigorously competitive world and the comprehension and wisdom to lead a fulfilling life in given circumstances. The skill part leads to diverse domains that education has branched out in: sciences, social sciences and humanities; and still further in many subjects and courses overlapping and intersecting in many interesting ways. These subjects may not equip the learner with the knowledge which is necessary to actively live a life as a member of a community or as a citizen. A teacher who is likely to succeed in becoming someone worth emulating is able to connect an individual in a community with the wider world by constantly reflecting and illuminating the relationship of the individual with the community and the community with the world. A teacher thus equips a learner with this contingent and dynamic form of knowledge apart from the domain from which s/he is apparently connected.

At the world level human beings are grappling with several grand issues such as climate change, income inequalities and rising power of technological giant company and states. These big issues are reflected and refracted in myriad ways with local issues with which a teacher and her students face and feel. Local issues could be school dropout, drug abuse, water shortage, unemployment, crime and psychological health etc. To be able to connect the biographical with the social and historical is one of the ways in which a teacher can alleviate the suffering of the community and prove right the dictum of Buddha that the understanding is the only true cure of human suffering. The connections and comparisons, which made with care and intelligence, between the local and the distant, between the empirical and the abstract, between what is practiced and what might be the principle is likely to impart what goes in the name of human wisdom. This might be termed the principle of interconnectedness that connects the seemingly unconnected or distant.

Even when the human teacher is endowed with fortunate traits of character which manifest in so many ways before her pupils, she may have to compete with many other icons in her culture to stay ahead in the minds of her students. Sometime a mere athlete and at others a singer or dancer might create enough of attraction around the growing students that the unglamorous teacher playing the large unpretentious role goes dim in their minds. A cricket player, a singer or an actor, for example, is centre of cultural hullabaloo made important through constant promotions through media. It is a pity that our icons thus come from such thin segment of life activities. To lay bare underlying and usually hidden mechanisms of cultural phenomenon and ideologies at work, such as spectator sport or left/right/centre of politics, is also an important task for a person who is looked up as a role model. This can be called critical thinking principle. To be a role model also involves the personal conduct of the teacher—the clothes she wears, means of transport he uses, causes she espouses or aspirations he chases after. This means a teacher practices closely what is expressed to be good and beautiful and ethically sustainable. This could be the hardest part for an individual to identify the social current and yet not fall under its sway, often leading to isolation and anomie.

Yash Pal
Asst. Professor
Deptt. Of English\

The Changes in Our School

I studied in the Govt. Girls Senior Secondary School, Shahzadpur. In the past, when we were there as students there were hardly any facilities but now there is a lot of change in that school. The school has become a modern looking school now. The old ordinary classrooms have been transformed into smart class rooms. Technology has entered classrooms- there are screens and electric appliances which facilitate learning.

There are two water coolers that provide clean drinking water. Laboratories have been beautified. A nursing lab is established and in the already established library the supplies of books has increased and the students are beginning to enjoy these changes. The toilets now have functional taps and the girls find it easier and even pleasant to stay in school. There is also a small temple dedicated to Saraswati, the goddess of learning. There is a beautiful garden. There must be more that I have failed to notice. There is a lot of positive change in the school.

Minakshi
BA-II, 22

Creaky Education System needs Reforms

“Even a circus lion learns to sit on a chair in the fear of whip, but we call such lion 'Well Trained' not 'Well Educated'.”

This is a famous dialogue of a movie but it can be applied on our education system. Most of the students are like circus lion, which are manufactured by our education system every year. They are only increasing Literacy rate of the country, but are not giving any contribution for the growth of country. They are fighting against unemployment. Thus the youth which could take the nation to the heights, is being wasted.

This is not the mistake of students. There are many reasons behind it. First reason is poor education system and some pedagogues. When I was in 6th standard we were introduced with guides by our teachers. Since then me and my classmates started relying on guides. We never tried to think and understand the simple concepts. We just crammed the guides and passed the examinations. But now at the age of 20 I realized that guides are crutches. These are big hindrances in the way of mental growth of students.

Another reason behind this problem is pattern of our society. Especially in rural areas girls face many problems. Some parents don't pay enough attention to their studies. They don't spend money on their studies, but save it for their marriage. Sometimes family problems are also obstacles in their studies. They have to bear many family and social pressures.

About 269 million people in India live below poverty line. These are not literate. They live in slums filled of garbage, brick kilns, footpaths etc. Many of these people don't send their children to school because they think that if they will go to school then who will work and bring money to home. So, except [rather than] going to school they work at tea stalls, shops, beg on signals, collect garbage. In this way they don't get equal opportunity to get education.

In pre-Independence India British opened schools and colleges in India to produce cheap clerks. Even after 75 years of independence, the schools and colleges are doing same work, except some exceptions. Education system is not changing. Students, Schools and, Universities are running after scores in exams which are rather predictable and patterned. Marks do not represent the capabilities of a student. For example: a person named Manoj Kumar Sharma failed in 12th standard. He passed it in his second attempt, but later he cracked UPSC (CSE) and became an I.P.S. officer. On the other side even University toppers are not able to crack those or even rudimentary exams. This shows that cramming does not work in every exam. Thus there is an urgent need to change the education system.

There are, however, many innovative teachers who worked and are still working, a lot for education sector. For example: about 6 years ago the Govt. Primary School, Moor Ghat, U.P. was an ordinary govt. school. It didn't have basic infrastructure. Only 19 students were studying there. Then a Headmaster named Sarvest Kumar was posted there. He went from home to home in the whole village and placated people to send their children to school. He arranged money from here and there for infrastructure of school. Now this school is a Model school having beautiful walls with paintings on them, Smart classrooms and E- Library. Now 280 students study there. There are many teachers like him, who, with their great efforts changed the life of many students.

Thus our education system needs reformation. Government should give more budget to education sector. Training should be given to teachers so that they can teach students with modern technologies. There should be no pressure on students; teachers should teach them in playful ways.

A very large part of India's population is of a young generation. The energy of this young generation should be used in the right direction for growth of the country. Now this is an important thing to understand that if education system—schools, colleges and universities—works for the holistic development of the students and teach them with interdisciplinary approach, then most students will shine out and genuine development comes about. This type of 'Well Educated' students can work actively for the development of country. Education is the only thing that can take the nation to new heights.

Aanchal
BA-III, 41

Moods of Friends

Friends love moods
The heart is kind to their every act
I still remember my friend who
Stood together in every trouble
I don't know when those moments will come back
With lots of fun and lot of laughs
When together we were just talk talk talk
Everything seemed special even the stern or boring class
The canteen, the tea, the samosas, the junky chips
The tangled noodles, the greasy pakodas and the chutney dips
In between the pranks, and long pulling of legs
It wasn't clear when the friendships took deepest colours
Some became friends for life and some even the secret partners
In everything—the opening of lids of tiffins and birthday bashes
And then the missed classes for fun and getting caught
Excuses that run like a thread that bind us
Teacher did not turn up for the class
All of us have found an excuse for selfies
Friends are useless and say things which are mean
But it is an exception that happens only in bad times
Oh it is long list of mistakes—our college time
But it was delicious and lot of fun too
Live together, today, everyday: this is friendship.
This is life and so the heart is kind to its every act.

संस्कृत भाग

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

संस्कृतभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा सर्वोत्तमसाहित्यसंयुक्ता चास्ति ।। संस्कृतभाषाया उपयोगिता एतस्मात् कारणाद् वर्तते यद् एषैव सा भाषाऽस्ति यतः सर्वासा भारतीयानाम् आर्यभाषाणाम् उत्पत्तिर्बभूव। संस्कृता वाक्, भारती, सुरभारती, अमरभारती, अमरवाणी, सुरवाणी, गीर्वाणवाणी, देववाणी, देवभाषा, इत्यादिभिः नामभिः एतद्भाषा प्रसिद्धा।

भारतीयभाषासु बाहुल्येन संस्कृतशब्दाः उपयुक्ताः। संस्कृतात् एव अधिका भारतीयभाषा उद्भूताः। तावदेव भारत-युरोपीय-भाषावर्गीयाः अनेकाः भाषाः संस्कृतप्रभावं संस्कृतशब्दप्राचुर्यं च प्रदर्शयन्ति।

व्याकरणेन सुसंस्कृता भाषा जनानां संस्कारप्रदायिनी भवति। अष्टाध्यायी इति नाम्नि महर्षिपाणिनेः विरचना जगतः सर्वासां भाषाणाम् व्याकरणग्रन्थेषु अन्यतमा, वैयाकरणानां भाषाविदां भाषाविज्ञानिनां च प्रेरणास्थानं इवास्ति। संस्कृतस्य प्राचीनतमग्रन्थाः वेदाः सन्ति। वेद-शास्त्र-पुराण-इतिहास-काव्य-नाटक-दर्शनादिभिः अनन्तवाङ्मयरूपेण विलसन्ती अस्ति एषा देववाक्। न केवलं धर्म-अर्थ-काम-मोक्षात्मकाः चतुर्विधपुरुषार्थहेतुभूताः विषयाः अस्याः साहित्यस्य शोभां वर्धयन्ति अपितु धार्मिक-नैतिक-आध्यात्मिक-लौकिक-पारलौकिकविषयैः अपि सुसम्पन्ना इयं देववाणी।

संस्कृता परिष्कृता परिशुद्धा व्याकरणसम्बन्धिदोषादिरहिता भाषा संस्कृतभाषेति निगद्यते। अतोऽन्या भाषा प्राकृतभाषापदवी प्राप्ता। प्राचीने समये एषैव भाषा सर्वसाधारणा आसीत्, सर्वे जनाः संस्कृतभाषाम् एव वदन्ति स्म । अतः ईसवीयसंवत्सरात्पूर्वं प्रायः समग्रमपि साहित्यं संस्कृतभाषायामेव उपलभ्यते । संस्कृतभाषायाः सर्वे जनाः प्रयोगं कुर्वन्ति स्म, इति तु निरुक्तमहाभाष्यादिग्रन्थेभ्यः सर्वथा सिद्धमेव । आधुनिक भाषाविज्ञानमपि एतदेव सनिश्चयं प्रमाणयति । संस्कृतभाषायामेव वेदेषु मनुष्याणां कर्तव्याकर्तव्यस्य सम्यक्तया निर्धारणं वर्तते । वेदानां व्याख्यानभूता ब्राह्मणग्रन्थाः सन्ति ।

तदनन्तरम् अध्यात्मविषयप्रतिपादिका उपनिषदः सन्ति, यासां महिमा पाश्चात्यैरपि निःसंकोचं गीयते । ततश्च भारतगौरवभूताः षड्दर्शनग्रन्थाः सन्ति। विश्वसाहित्येऽद्यापि सर्वमान्याः सन्ति । ततश्च श्रौतसूत्राणां, गृह्यसूत्राणां, धर्मसूत्राणां, वेदस्य व्याख्यानभूतानां षडङ्गानां च गणना भवति ।

महर्षिवाल्मीकिकृतवाल्मीकीयरामायणस्य, महर्षिव्यासकृतमहाभारतस्य च रचना विश्वसाहित्येऽपूर्णं घटना आसीत् । सर्वप्रथमं विशदस्य कवित्वस्य, प्रकृतिसौन्दर्यस्य, नीतिशास्त्रस्य, अध्यात्मविद्यायाः तत्र दर्शनं भवति। तदनन्तरं, कौटिल्यसदृशाः अर्थशास्त्रकाराः भासकालिदासाश्चोषभवभूतिदण्डिसुबन्धुबाणजयदेवप्रभूत यो ।

महाकवयो नाट्यकाराश्च पुरतः समायान्ति, भगवद्गीता, पुराणानि, स्मृतिग्रन्थाः अन्यद्विषयकं च सर्व साहित्यं संस्कृतस्य माहात्म्यमेवोद्घोषयति ।

संस्कृतभाषा एव भारतस्य प्राणभूता भाषाऽस्ति। भारतीयगौरवस्य रक्षणाय एतस्याः प्रचार प्रसारश्च सर्वव कर्तव्यः ।

डॉ. गीता देवी

संस्कृत विभागाध्यक्षः

संस्कृत दिवसः

1. आत्मन्त्रितोल्लासविलासिवर्षः
विवृद्धवृद्धौघहुषीकहर्षः।
विघोतितच्छात्रगुणप्रकर्षः
सुपर्वनाभदिवसोप्रवमार्षः।।
2. मनोमुदः कोविदकुत्रजराणां
तन्यन्तः एतेन च निर्जराणां।
गुणैर्गरिष्ठैरिहः मासमानो
विराजतां संस्कृतवासरोप्रयम्।।
3. प्रतिप्रदेशं किल कीर्तिघोषः
जनैः समुत्तोल्य मदा स्वदोषः।
गीर्वाणावीगुणगौरवाणा
माचर्यते संसदि कोविदानाम्।।

Isha
Roll no 128
B.A first year

मातृवन्दनम्

पुरः पुरः प्रगच्छ रे। प्रगाय मातृवन्दनम् ।।
स्व-जन्म-भूमि रक्षणे। प्रयच्छ वीर! जीवनम्।।
शिरः कुरु समुन्नतम् । तवास्तु मा क्वचिद् भयम्।।
पुरः पुरः प्रगच्छ रे। प्रगाय मातृवन्दनम्।।
रणे धृतिः सुकौशलम्। प्रवर्धताम् मनोवलम्।।
सुनिश्चितः जयस्तव। कुरु स्वर्धपालनम्।।
पुरः पुरः प्रगच्छ रे प्रगाय मातृवन्दनम्।।

Ashu
Class-BA
Roll no- 45

मम मातृभूमिः

"जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"।
मातृभूमि जन्मतः आरभ्य मृत्युपर्यन्तं अस्माकं रक्षणं पोषणं च करोति।
माता भूमिः पुत्रोअहम पृथिव्याः इति वेदवाक्यम अस्ति।
मातृभूमि सवैः नरैः वन्दनीया भवति।
येन - केन-परकारेण मातृभूमेः रक्षणं करणीयम्।

Tanu
Class - BA first year
Roll No. 61

पिपासितः काकः

एकदा एकः काकः पिपासितः आसीत्। सः जलं पातुम् इतस्ततः अभ्रमत्। परं कुत्रापि जलं न प्राप्नोत्। अन्ते सः एकं घटम् अपश्यत्। घटे जलं स्वल्पम् आसीत्। सः जलं पातुं समर्थः न अभवत्। स एकम् उपायम् अचिन्तयत्। सः पाषाणस्य खण्डानि घटे अक्षिपत् एवं क्रमेण घटस्य जलम् उपरि आगच्छत्। काकः जलं पीत्वा संतुष्टः अभवत्। शिक्षा- उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

Meenakshi
Class -BA 1st
Roll No.129

तीन वचन

तीन वचन है तीन पुरुष है,
तीनों के नियम भी तीन है।

10 लकार और 8 कारक,
आठो मे है लिंग भी तीन।

एक अकेला एकवचन है,
द्विवचन मे दो को गिन।

बहुवचन आते सारे
सभी पुरुषो मे वचन भी 3।

सः तौ ते पृथम पुरुष कहलाते,
त्वम् युवां यूयं मध्यम है,
अहं आवां वयं उत्तम जाने जाते

धातु है अनेक यहां पर,
क्रिया भी अनेक
वाच्य 3 बन जाते है

पठ से पढते, लिख से लिखते,
पिब् से हम पीते है।

गुण ,वृद्धि, यण् दीर्घ
सन्धि का अर्थ बदलते है।

Rajni
Class BA First year
Roll No. 144

सदाचारः

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युध्मसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।1।।

श्वः कार्यमच्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराहिकम्।
नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्।।2।।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः।।3।।

सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता तथा।
ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं न कदाचन।।4।।

श्रेष्ठं जनं गुरुं चापि मातरं पितरं तथा।
मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा।।5।।

मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः।
इति ज्ञात्वा प्रयासेन तदेव परिवर्जये।।6।।

Pooja rani
Class. B. A 2nd year
Roll No. 120005002090

चतुरः काकः

एकः काकः अस्ति। सः बहु तृषितः। सः जलार्थं भ्रमति। तदा ग्रीष्मकालः। कुत्रापि जलं नास्ति। काकः कष्टेन बहुदूरं गच्छति। तत्र सः एकं घटं पश्यति। काकस्य अतीव सन्तोषः भवति। किन्तु घटे स्वल्पम् एव जलम् अस्ति। जलं कथं पिबामि ? इति काकः चिन्तयति सः एकं उपायं करोति। शिलाखण्डान् आनयति। घटे पूरयति। जलम् उपरि आगच्छति। काकः सन्तोषेण जलं पिबति। ततः गच्छति।

Renu
Class -BA 1ST
Roll No.095

सर्वेभ्यः शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यः लभते इह सम्मानम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यः करोति देशानाम् निर्माणम्

किम् अस्ति तत् पदम् यम् कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यस्य छायायाः प्राप्तम् ज्ञानम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यः रचयति चरित्र जनानाम्

'गुरू' अस्ति अस्य पदस्य नाम सर्वेषाम् गुरूणाम् मम शतं शत प्रणामः ॥

Pooja rani
Class. B. A 2nd year
Roll No. 120005002090

Punjabi Section

ਸੰਪਾਦਕੀ

ਪਿਆਰੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਓ ਜਿੰਨ੍ਹੀ ਸੋਹਨੀ ਕੁਦਰਤ ਹੈ, ਉਨ੍ਹੀ ਹੀ ਸੋਹਨੀ ਕਲਾ ਹੈ। ਪਰ ਉਹ ਕਲਾ ਜਿਹੜੀ ਕੁਦਰਤ ਨੂੰ ਹੋਰ ਵੀ ਸੋਹਣੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਕਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ, ਉਸ ਕਲਾ ਦਾ ਕੋਈ ਮੁਕਾਬਲਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਹਿਤ ਰਚਨਾ ਕਰਨਾ ਵੀ ਇੱਕ ਕਲਾ ਹੈ। ਜਿਹੜੀ ਕਿ ਹਰ ਇਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਕੋਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਦੇਖਣਾ ਇਹ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਕਿ ਉਹ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਉਸ ਕਲਾ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਚੱਜ ਨਾਲ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਜਾਂ ਨਹੀਂ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਵਿਦਿਆਰਥਣਾਂ ਨੇ ਕਾਲੇਜ ਮੈਗਜ਼ੀਨ ਵਿੱਚ ਛਪਵਾਉਣ ਲਈ ਰਚਨਾਵਾਂ ਲਿਖੀਆਂ ਹਨ। ਲਗਭਗ ਸਾਰੀਆਂ ਹੀ ਰਚਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਮੈਗਜ਼ੀਨ ਵਿੱਚ ਛੱਪਣ ਦਾ ਮੌਕਾ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਪਰ ਹੋਰ ਵਧੀਆ ਰਚਣਾ ਲਿਖਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰੋ। ਤਾਂ ਜੋ ਲਿਖਣ ਕਲਾ ਵਿੱਚ ਹੋਰ ਨਿਖਾਰ ਆ ਸਕੇ।

ਡਾ. ਕਸ਼ਮੀਰ ਸਿੰਘ
ਪ੍ਰਾਧਿਆਪਕ ਪੰਜਾਬੀ।

ਸੌਦਾਗਰ

ਆ ਗਿਆ ਵਿੱਚ ਬਜ਼ਾਰ ਸੌਦਾਗਰ ।
 ਚੰਗੇ-ਮੰਦੇ ਦਾ ਭੇਤ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦਾ ।
 ਵੇਚਣ ਅਤੇ ਖਰਦੀਣ ਸੌਦਾ ।
 ਬੰਦਾ ਨਕਲੀ ਪਰ ਅਸਲੀ ਦਿਸਦਾ ।
 ਬਨਾਵਟੀ ਹਾਸਾ ਪਰ ਬਹੁਤਾ ਫੱਬਦਾ ।
 ਦਿਲ ਦੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਨਾਲ ਉਹ ਠੱਗਦਾ ।
 ਟੇਡੀ ਨਜ਼ਰ ਅਤੇ ਵਿੰਗਾ ਕਿਰਦਾਰ ।
 ਆਮ ਬੰਦੇ ਤੇ ਕਰ ਰਿਹਾ ਵਾਰ ।
 ਐਸਾ ਚਿਹਰਾ ਉਸ ਨੇ ਬਣਾਇਆ ।
 ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਖੂਬ ਹੈ ਭਾਇਆ ।
 ਅਸਲੀ ਰੂਪ ਜਦ ਉਸ ਨੇ ਦਿਖਾਇਆ ।
 ਤਾਂ ਹੋਣ ਲੱਗ ਪਈ ਮਾਰੋ-ਮਾਰ ।
 ਸਮਝ ਵਿੱਚ ਆਇਆ ਤਾਂ ਦੇਰ ਹੋ ਗਈ ।
 ਦਿਨ ਵੇਲੇ ਹੀ ਨੂੰਰ ਹੋ ਗਈ ।
 ਭਰਿਆ ਪਾਣੀ ਦਾ ਸੂਖ ਗਿਆ ਸਾਗਰ ।
 ਵਿੱਚ ਬਜ਼ਾਰ ਆਇਆ ਸੌਦਾਗਰ ।

ਡਾ. ਕਸ਼ਮੀਰ ਸਿੰਘ
 ਪ੍ਰਾਧਿਆਪਕ ਪੰਜਾਬੀ ।

ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ

ਮਾਸ ਤੇ ਬੁੱਤ ਨਗੀਨੇ ਵਿਕਦੇ,
 ਹੁਣ "ਭਗਤ ਸਿੰਘਾਂ" ਵਿੱਚ ਬਜ਼ਾਰਾਂ ਦੇ,
 ਇੱਥੇ ਸਿੱਕਿਆਂ ਵਾਲੇ ਕਦਰ ਨਾ ਜਾਨਣ
 ਕੀ ਹੁੰਦੇ ਮੁੱਲ ਦਿਲਦਾਰਾਂ ਦੇ,
 ਪਰਦੇ ਤੋਂ ਪਰਦਾ ਲਾਹ ਦਿੱਤਾ,
 ਨਾਮ ਚਮਕਦੇ ਬੇਸ਼ਰਮ ਫਨਕਾਰਾਂ ਦੇ,
 ਤੇਰੇ ਮੁਲਕ ਚੋਂ ਨੰਗਪੁਣੇ ਦੀ ਹੱਦ ਨਾ ਰਹੀ
 ਹੁਣ ਪੰਨੇ ਰੋਦੇ ਨੇ ਅਖਬਾਰਾਂ ਦੇ,
 ਪਿਛੋਕੜ ਨੂੰ ਪਿਛੇ ਛੱਡ ਗਏ,
 ਗੀਤ ਨਵਜੰਮਿਆਂ ਗੀਤਕਾਰਾਂ ਦੇ,
 ਹੁਣ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ੀ ਜਾਣ ਦੀ ਸੋਚ ਨੇ,
 ਨਿਕੰਮੇ ਕਰਤੇ ਪੁੱਤ ਸਰਦਾਰਾਂ ਦੇ,
 ਤੇਰੇ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਤਲਵਾਰਾਂ ਸੁੱਤੀਆਂ,
 ਹੁਣ ਸਿਰ ਵੱਧ ਗਏ ਗੱਦਾਰਾਂ ਦੇ,
 ਦੇਸ਼ ਤੇਰੇ ਦੇ ਲੋਕੀ ਭੁੱਖੇ ਮਰਦੇ,
 ਢਿਡ ਭਰਦੇ ਸਰਕਾਰਾਂ ਦੇ ।

ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ

ਬੀ.ਏ.-II

ਰੋਲ ਨੰ. 3648220114

"ਨਸ਼ਾ"

ਰੰਗਲਾ ਪੰਜਾਬ ਸਾਰਾ ਫਿੱਕਾ ਪੈ ਗਿਆ,
 ਬਸ ਮੱਥੇ ਤੇ ਕਲੰਕ ਵਾਲਾ ਟਿੱਕਾ ਰਹਿ ਗਿਆ,
 ਰੁਲ ਗਈ ਜਵਾਨੀ ਦੁੱਧ ਮਖਣਾਂ ਨਾਲ ਪਾਲੀ,
 ਰੰਗ ਚਿਹਰੇ ਵਾਲਾ ਚੋਖਾ ਸਾਰਾ ਚਿੱਟਾ ਲੈ ਗਿਆ.....
 ਹਨੇਰੀ ਨਸ਼ਿਆ ਦੀ ਕਰਕੇ ਅਟੈਕ ਬੈਠ ਗਈ,
 ਜੇਬਾਂ ਸਬਨਾਂ ਦੀ ਚ ਨਾਗਨੀ ਬਲੈਕ ਬੈਠ ਗਈ,
 ਦੱਸੋ ਕਿੱਥੋਂ ਵਧੂ ਫੁੱਲ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਏਹ ਬੂਟਾ ?
 ਜਿਹੜੀ ਜੜਾਂ ਵਿੱਚ ਸਦਾ ਲਈ ਸਮੈਕ ਬੈਠ ਗਈ.....
 ਸਿਗਰਟ, ਬੀੜੀ, ਜਰਦਾ, ਦਾਰੂ,
 ਬਣੇ ਨਸ਼ੇੜੀ ਸਾਰੇ ਕੰਮ ਕਾਰੂ,
 ਭੁੱਕੀ, ਡੋਡੇ, ਖਾਣ ਅਫੀਮਾਂ,
 ਮੈਡੀਕਲ ਨਸ਼ਾ ਸਿਹਤ ਤੇ ਮਾਰੂ ।
 ਕਿਉ ਵਧੀਕੀ ਨਸਿਆਂ ਦੀ ਚੁੱਪਚਾਪ ਅਸੀਂ ਸਹੀਏ ?
 ਕਿਉ ਵਿਰਾਸਤਾਂ ਦਾ ਮੁੱਲ ਨਿੱਤ ਬਲੀਆਂ ਚ ਦੇਈਏ ?
 ਨਵਾਂ ਕਰਕੇ ਆਗਾਜ਼, ਅਸੀਂ ਚੁੱਕਾਂਗੇ ਆਵਾਜ਼,
 ਨਸ਼ਾ ਮੁਕਤ ਪੰਜਾਬ ਵਾਲਾ ਬੀੜਾ ਅਸੀਂ ਲਈਏ ।

ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ

ਬੀ.ਏ.-II

ਚੋਲ ਨੂੰ. 3648220114

ਕੁਝ ਗੱਲਾਂ

1. ਭਰੋਸਾ

ਭਰੋਸਾ ਰਿਸ਼ਤੇ ਦੀ ਸਬ ਤੋਂ
ਮਹਿੰਗੀ ਸ਼ਰਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ।

2. ਫਿਲਟਰ ਦੀ ਖੁਬਸੂਰਤੀ

ਮਿੱਟੀ ਦਾ ਬਣਿਆ ਇਨਸਾਨ
ਅਜਕੱਲ ਫਿਲਟਰ ਦੀ ਖੁਬਸੂਰਤੀ
ਤੇ ਗਰੂਰ ਕਰਦਾ ਹੈ ।

3. ਵਰਤਾਉ

ਸਾਡਾ ਆਪਣੇ ਮਾਓ ਪਿਉ ਨਾਲ
ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਵਰਤਾਉ ਉਹ ਕਿਤਾਬ ਹੈ
ਜੋ ਸਾਡੇ ਬੱਚੇ ਸਾਨੂੰ ਪੜਾਉਂਦੇ ਹਨ ।

4. ਰੱਬ

ਜੇ ਤੂੰ ਕਬੂਲ ਕਰ ਲਵੇ ਕੇ ਸਭ ਦਾ
ਕਰਨਹਾਰ ਕਰਤਾਰ ਹੈ ਤਾਂ ਤੂੰ ਦਿਮਾਗੀ
ਮਰੀਜ਼ ਹੋਣੇ ਬਚ ਜਾਵੇਂਗਾ ।

5. ਚੁੰਨੀ

ਚੁੰਨੀ ਦਾ ਮੂਲ ਬਹੁਤਾ ਨੀ 100 ਰੁਪਏ
ਦੀ ਮਿਲਦੀ ਹੈ । ਪਰ ਸਿਰ ਤੇ ਰਖੀ ਹੋਈ
ਅਰਬਾਂ ਦੀ ਇੱਜ਼ਤ ਢਕ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ।

ਗਗਨਦੀਪ ਕੌਰ

ਬੀ.ਏ.-III

ਰੋਲ ਨੰ. 3648220088

ਕਵਿਤਾ

ਮੰਜਿਆਂ ਤੇ ਬਹਿੰਦੇ ਸੀ ਕੋਲ-ਕੋਲ ਰਹਿੰਦੇ ਸੀ,
 ਸੋਫੇ ਬੈਠ ਆ ਗਏ ਨੇ ਦੁਰਿਆਂ ਵਧਾ ਗਏ ਨੇ,
 ਛੱਤਾਂ ਤੇ ਨਾ ਸੌਂਦੇ ਹੁਣ ਬਾਤਾਂ ਵੀ ਨਾ ਪੌਂਦੇ ਹੁਣ,
 ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਰੁੱਖ ਸਨ ਸਾਂਝੇ ਸੁਖ-ਦੁਖ ਸਨ,
 ਬੁਹਾ ਖੁੱਲ੍ਹਾ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ ਰਾਹੀ ਵੀ ਆ ਬਹਿੰਦਾ ਸੀ,
 ਕਾਂ ਵੀ ਕੁਰਲਾਉਂਦੇ ਸੀ ਪਰਾਹੁਣੇ ਵੀ ਆਉਂਦੇ ਸੀ,
 ਸਾਈਕਲ ਨਹੀ ਕੋਲ ਸੀ ਤਾਂ ਵੀ ਮੇਲ-ਜੋਲ ਸੀ,
 ਰਿਸ਼ਤੇ ਨਿਭਾਉਂਦੇ ਸਾਂ ਰੁੱਸਦੇ ਮਨਾਉਂਦੇ ਸਾਂ,
 ਪੈਸਾ ਭਾਵੇਂ ਘੱਟ ਸੀ ਮੱਥੇ ਤੇ ਨਾ ਵੱਟ ਸੀ,
 ਕੰਧਾਂ ਕੋਲੇ ਕੱਚੇ ਸਨ ਸਾਕ ਸਾਰੇ ਸੱਚੇ ਸਨ,
 ਸ਼ਾਇਦ ਕੁਝ ਪਾਇਆ ਹੈ ਬਹੁਤਾ ਤਾਂ ਗੁਆਇਆ ਹੈ ।

ਆਰਤੀ

ਬੀ.ਏ.-I

ਰੋਲ ਨੰ. 2149

ਮਿੱਟੀ

ਵੇਖ ਫਕੀਰਾ ਮਿੱਟੀ ਖੁੱਲੀ,
 ਮਿੱਟੀ ਉਤੇ ਮਿੱਟੀ ਡੁੱਲੀ,
 ਮਿੱਟੀ ਹੱਸੇ ਮਿੱਟੀ ਰੋਵੇ,
 ਅੰਤ ਮਿੱਟੀ ਦਾ ਮਿੱਟੀ ਹੋਵੇ,
 ਨਾ ਕਰ ਬੰਦਿਆ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ
 ਨਾ ਇਹ ਤੇਰੀ ਨਾ ਇਹ ਮੇਰੀ,
 ਚਾਰ ਦਿਨਾਂ ਦਾ ਮੁਲਾ ਦੁਨਿਆਂ,
 ਫਿਰ ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਬਣ ਜਾਣਾ ਵੇਰੀ ।

ਤੰਨੂੰ
 ਬੀ.ਏ.-I
 ਰੋਲ ਨੰ. 2046

ਮਾਂ ਦਾ ਕਰਜ਼

ਮਾਂ ਦਾ ਦੇਣ ਮੈਂ ਕਿਵੇਂ ਚੁਕਾਵਾਂ ?
 ਹਰ ਪਲ ਆਪਣਾ ਸੀਸ਼ ਝੁਕਾਵਾਂ ।
 ਦਸੀਆਂ ਮਾਂ ਦੀਆਂ ਚੰਗੀਆਂ ਗੱਲਾਂ
 ਉਸ ਤੇ ਮੈਂ ਹਰ ਵੇਲੇ ਚੱਲਾਂ ।
 ਹਰ ਮਾਂ ਦਾ ਨਾਂ ਹੋਵੇ ਉਚਾ
 "ਮਾਂ" ਸ਼ਬਦ ਜਿਉਂ ਡਾਢਾ ਸੁੱਚਾ ।

ਕੁਲਦੀਪ
 ਬੀ.ਏ.-I
 ਰੋਲ ਨੰ. 1210051002016

ਕਵਿਤਾ

ਕੁਝ ਨਾ ਚੇਤੇ ਰਹਿਣਾ, ਬਸ ਇਹ ਪਲ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ,
 ਜੋ ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਏ, ਉਹ ਪਲ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ,
 ਕਦੇ ਕਲਾਸ ਵਿੱਚ ਹੀ ਬਹਿਣਾ, ਤੇ ਕਦੇ ਗਰਾਊਂਡ ਚ ਗੋੜੀ ਲਾਉਣਾ,
 ਵੇਲੇ ਕੁਵੇਲੇ ਦਿਲ ਦੀ ਕੁੰਡੀ ਖੜਕਾਉਣਗੇ,
 ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਏ ਉਹ ਪਲ, ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ,
 ਕਦੇ ਲੈਕਚਰ ਨਾ ਲਾਉਣਾ ਤੇ ਕਦੇ ਲੈ ਉਬਾਈਆਂ ਲੈਕਚਰ ਲੰਘਾਉਣਾ,
 ਕਦੇ ਦੋਸਤਾਂ ਮਿੱਤਰਾਂ ਨਾਲ ਚਾਹ ਦੀਆਂ ਸਰਤਾਂ ਲਾਉਣਾ,
 ਔਖੇ ਵੇਲੇ ਨਿਮੇ ਦੀਵੇ ਦੀ ਧਰਵਾਸ ਬਣਾ ਆਉਣਗੇ,
 ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਏ ਉਹ ਪਲ, ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ,
 ਕਦੇ ਟਾਈਮ ਸਿਰ ਕਾਲਜ ਚ ਆਉਣਾ, ਤੇ ਕਦੇ ਘੜੀ ਨਾਲ ਸ਼ਰਤਾਂ ਲਾਉਣਾ,
 ਫੇਰ ਖੜੇ ਪਰੀਂ ਬਹਾਨੇ ਬਣਾਉਣਾ,
 ਸੂਹੇ ਚੰਗੀ ਦਿਨ ਬੁਲੀ ਮੁਸਕਾਨ ਲਿਆਉਣਗੇ,
 ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਏ ਉਹ ਪਲ, ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ,
 ਇਕ ਦੂਜੇ ਦਾ ਮਜਾਕ ਉਡਾਉਣਾ, ਓ ਕਦੇ ਬਿਨਾ ਗੱਲ ਤੇ ਖੌਰੂ ਪਾਉਣਾ,
 ਕਦੇ ਪੇਪਰਾਂ ਚ ਨਕਲ ਚਲਾਉਣਾ, ਤੇ ਕਦੇ ਚੋਰੀ ਛਿੱਪੇ ਪਰਚੀਆਂ ਬਣਾਉਣਾ,
 ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੇ ਰੱਖੇ ਹੋਏ ਨਾਮ ਦਿਲ ਚ ਹਲਚਲ ਮਚਾਉਣਗੇ,
 ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਏ ਉਹ ਪਲ, ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ,
 ਅੱਜ ਵਿਦਾ ਲੈਂਦੇ ਹੋਏ ਦੁਆ ਇਹ ਕਰਦੇ ਹਾਂ,
 ਫੁੱਲ ਨਵੇਂ (ਨਵੇਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀ) ਹਮੇਸ਼ਾ ਤੇਰੀਆਂ ਹਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਮਹਿਕਾਉਗੇ,
 ਜਦ ਵੀ "ਆਂਚਲ" ਵੱਲੋਂ ਲਿਖੇ ਹਰਫ, ਚੋਰੀ ਚਿਪੇ ਝਾਤ ਜਿਹੀ ਪਾਉਣਗੇ,
 ਤਦ ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਏ ਉਹ ਪਲ, ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ,
 ਉਹ ਪਲ, ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ, ਉਹ ਪਲ, ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ,

ਆਂਚਲ
 ਬੀ.ਏ.-I
 ਰੋਲ ਨੰ. 138

ਮਾਂ

ਸਾਡੇ ਹਰ ਦੁੱਖ ਦੀ ਦਵਾ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਕਦੇ ਝਿੜਕਦੀ ਹੈ ਸਾਨੂੰ ਤੇ ਕਦੇ ਗਲੇ ਲਗਾ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਸਾਡੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਹੰਝੂ ਆਪਣੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਵਿੱਚ ਸਮਾ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਆਪਣੇ ਚੇਹਰੇ ਦੀ ਮੁਸਕਾਨ ਸਾਡੇ ਤੇ ਲੁਟਾ ਦਿੰਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਸਾਡੀਆਂ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਵਿੱਚ ਸਾਮਿਲ ਹੋ ਕੇ ਆਪਣੇ ਗਮ ਭੁਲਾ ਦਿੰਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਜਦੋਂ ਵੀ ਕਦੇ ਠੋਕਰ ਲੱਗੇ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਯਾਦ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਤਪਸ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਅੰਚਲ ਵਿੱਛ ਲੁਕੇ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਆਪ ਚਾਹੇ ਕਿੰਨੀ ਵੀ ਥੱਕੀ ਹੋਵੇ ਸਾਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਆਪਣੀ ਥਕਾਨ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਪਿਆਰ ਭਰੇ ਹਥਾਂ ਨਾਲ ਹਮੇਸ਼ਾ ਸਾਡੀ ਥਕਾਨ ਮਿਟਾਉਂਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਗੱਲ ਜਦੋਂ ਵੀ ਹੋਵੇ ਲਜੀਜ਼ ਖਾਣੇ ਦੀ ਤਾਂ ਯਾਦ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਰਿਸਤਿਆਂ ਨੂੰ ਖੂਬਸੂਰਤੀ ਨਾਲ ਨਿਭਾਉਣਾ ਸਿਖਾਉਂਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਲਫਜ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਜਿਸ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਅਜਿਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਮਾਂ
 ਰੱਬ ਜਿਸਦੀ ਮਮਤਾ ਦੇ ਅੱਗੇ ਝੁਕ ਜਾਵੇ ਅਜਿਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਮਾਂ ।

ਰੇਖਾ

ਬੀ.ਏ.-I

ਰੋਲ ਨੰ. 1210051002100

ਕਵਿਤਾ

ਇੱਕ ਕਰਤਾ ਇੱਕ ਜਹਾਨ, ਇੱਕ ਜਿਹੇ ਰੂਪ ਦੇ ਨੇ ਸਾਰੇ ਇਨਸਾਨ ।
 ਇੱਕੋ ਜਿਹੇ ਲਹੁ ਹੱਡ, ਇੱਕੋ ਜਿਹੀ ਸਾਰਿਆਂ ਵਿੱਚ ਜਿੰਦ ਜਾਨ ।
 ਇੱਕੋ ਜਿਹੀ ਦੇਹ ਉੱਤੇ ਮਾਸ, ਇੱਕੋ ਜਿਹਾ ਲੈਦੇ ਨੇ ਸਾਰੇ ਸ਼ਵਾਸ ।
 ਦੱਸ ਬੰਦਿਆ ਫਿਰ ਕੋਣ ਛੂਤ ਤੇ ਕੋਣ ਖਾਸ

ਸਾਇਰੀ

ਫਰਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਖੁਦਾ ਅਤੇ ਫਕੀਰ ਚ, ਫਰਕ ਹੁੰਦਾ ਹੇ ਕਿਸਮਤ ਅਤੇ ਲਕੀਰ ਚ ।
 ਜੇਕਰ ਕੁਝ ਚਾਹੇ ਅਤੇ ਨਾ ਮਿਲੇ, ਤਾਂ ਸਮਝ ਲੈਣਾ ਕਿ ਕੁਝ ਹੋਰ ਲਿਖਿਆ ਹੈ
 ਤਕਦੀਰ ਚ ।

ਆਪਣੇ ਉਹ ਪੁਰਾਣੇ ਦਿਨ, ਕਦੇ ਨਾਂ ਭੁਲੇ ਜਦੋਂ ਤੁਸੀ ਉਹਨਾਂ ਚੀਜਾਂ ਲਈ
 ਅਰਦਾਸ ਕਰਦੇ ਹੁੰਦੇ ਸੀ ਅੱਜ ਜੋ ਤੁਹਾਡੇ ਕੋਲ ਹਨ ।

ਸੰਜਨਾ ਦੇਵੀ

ਬੀ.ਏ.-II

ਰੋਲ ਨੰ. 120005002121

ਸਰਫਾ (ਬਚਤ ਕਰਨਾ) ਕਹਾਣੀ

ਖੇਤ ਗੇੜਾ ਮਾਰ ਕੇ ਸਿਕੰਦਰ ਸਿੰਘ ਜਿਉ ਹੀ ਘਰ ਵੜਿਆ ਘਰ ਵਾਲੀ ਰਸੋਈ ਚੌਂ ਦੁਪਹਿਰ ਦੀ ਬਚੀ ਚਾਹ ਪਸ਼ੂਆਂ ਦੇ ਦਾਣੇ ਵਾਲੇ ਬਾਂਡੇ ਵਿੱਚ ਪਲਟ ਰਹੀ ਸੀ ਸਿਕੰਦਰ ਰੋਹਬ ਭਰੇ ਲਹਿਜੇ ਨਾਲ ਬੋਲਿਆ ਉਨੀ ਹੀ ਬਣਾਇਆ ਕਰੋ ਜਿੰਨੀ ਪਿਣੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ । ਪਹਿਲਾਂ ਵਾਲੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਭੁਲ ਜਾਉ ਖੰਡ ਬਹੁਤ ਮੰਹਿਗੀ ਹੋ ਗਈ ਏ ਤੁਸੀ ਲਿਆਉਣੀ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਪਤਾ ਲੱਗੇ । ਘਰੋਂ ਬੈਠੀਆਂ ਪਤੀਲੇ ਭਰ-ਭਰ ਕੇ ਬਣਾ ਲੈਦੀਆਂ ਨੇ ਜਦੋਂ ਪੀਤੀ ਨੀ ਜਾਂਦੀ ਫਿਰ ਆਸੇ-ਪਾਸੇ ਡੋਲਦੀਆਂ ਫਿਰਨਗੀਆਂ ਮਾੜਾ ਮੋਟਾ "ਸਰਫਾ" ਕਰਨਾ ਸਿਖ ਲਓ ਘਰੇ ਬਠੀਆਂ ਚਾਹ ਛਕੀ ਜਾਨੀਆ ਐ ਕੋਈ ਨੀ ਪੁੱਤਰ, ਤੇਰੀ ਸਰਾਬ ਨਾਲੋ ਤਾਂ ਨਹੀ ਖੰਡ ਮੰਹਿਗੀ, ਜਿਹੜੀ ਸੱਭਰਾ ਦੀ ਨੀਤ ਚਾੜ੍ਹ ਜਾਨੇ ਚਾਹ ਤਾ ਸਾਰਾ ਟੱਬਰ ਰਲ ਕੇ ਪੀਂਦੇ ਜਿਸ ਦਿਨ ਤੂੰ ਸਰਪਾ ਕਰਨਾ ਸਿਖ ਲਿਆ ਸਾਰਾ ਟੱਬਰ ਆਪੇ ਸਰਫਾ ਕਰਨਾ ਸਿਖ ਜਾਉ ਮਾਂ ਦੇ ਮੁਹੋਂ ਸੱਚੀ ਗਲ ਸੁਣ ਕੇ ਸਿਕੰਦਰ ਚੁਪ-ਚਾਪ ਘਰਵਾਲੀ ਵੱਲ ਟੇਡੀ ਅੱਖ ਨਾਲ ਤਕਦਾ ਅੰਦਰ ਵੜ ਗਿਆ । ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਤੋਂ ਸਾਨੂੰ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਕਦੇ ਆਪਣੇ ਵੱਲ ਦੇਖ ਕੇ ਹੀ ਦੁਸਰੇ ਨੂੰ ਕੁਝ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ । ਨਹੀ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੀ ਹੈਸਿਅਤ ਨਾਲ ਬੋਲਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ।

ਰੇਨੂੰ
ਬੀ.ਏ.-1
ਰੋਲ ਨੰ. 74

ਮਿੱਠੇ ਬੋਲ

ਮਿੱਠੇ ਬੋਲ ਜੋ ਬੋਲਣ ਭਾਈ,
ਰਹਿੰਦੀ ਉਥੇ ਸੁਲਹ-ਸਫਾਈ ।

ਕੋੜੇ ਬੋਲ ਜੋ ਬੋਲਣ ਭਾਈ,
ਰਹਿੰਦੀ ਉਥੇ ਸਦਾ ਲੜਾਈ ।

ਮਿੱਠੇ ਬੋਲ ਨੇ ਪਿਆਰ ਸਿਕਾਉਂਦੇ,
ਦੁਸ਼ਮਨ ਭਾਈ ਵੀ ਗਲੇ ਲਗਾਉਂਦੇ ।

ਕੋੜੇ ਬੋਲ ਨਫਰਤ ਨੇ ਸਿਕਾਉਂਦੇ,
ਇਕ ਦੂਜੇ ਤੋਂ ਦੁਰ ਕਰਾਉਂਦੇ ।

ਕੋਇਲ ਸਬ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਲੱਗਦੀ,
ਕੂ-ਕੂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਮਿਸ਼ਰੀ ਘੁਲਦੀ ।

ਕਾਂ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਰਤਾ ਨਾ ਭਾਵੇ,
ਕਾਂ-ਕਾਂ ਕਰਕੇ ਕੰਨ ਹੈ ਖਾਵੇ ।

ਮਿੱਠੇ ਬੋਲ ਜੋ ਬੋਲਣ ਬੱਚੇ,
ਜਿਦ ਨਾ ਕਰਦੇ ਚੰਗੇ ਬੱਚੇ ।

ਹਰ ਜਗ੍ਹਾ ਉਹ ਪਿਆਰ ਨੇ ਪਾਉਂਦੇ,
ਜੀਵਨ ਆਪਣੇ ਨੂੰ ਰੁਸਨਾਉਂਦੇ ।

ਰਾਜਬਿੰਦਰ ਕੌਰ

ਬੀ.ਏ.-II

ਰੋਲ ਨੰ. 20005002163

Commerce Section

INTELLECTUAL PROPERTY RIGHTS

Intellectual property (IP) pertains to any original creation of the human intellect such as artistic, literary, technical, or scientific creation. Intellectual property rights (IPR) refers to the legal rights given to the inventor or creator to protect his invention or creation for a certain period of time. These legal rights gives an exclusive right to the inventor/creator to fully utilize his invention/creation for a given period of time. IP plays a vital role in the modern economy. It has also been conclusively established that the intellectual labor associated with the innovation should be given due importance so that public good emanates from it. There has been a quantum jump in research and development (R&D) costs with an associated jump in investments required for putting a new technology in the market place. The stakes of the developers of technology have become very high, and hence, the need to protect the knowledge from unlawful use has become expedient, at least for a period, that would ensure recovery of the R&D and other associated costs and adequate profits for continuous investments in R&D. IPR is a strong tool, to protect investments, time, money, effort invested by the inventor/creator of an IP since it grants the inventor/creator an exclusive right for a certain period for the use of his invention/creation. Thus IPR, in this way aids the economic development of a country by promoting healthy competition and encouraging industrial development and economic growth.

Originally, only patents, trademarks, and industrial designs were protected as ‘Industrial Property’, but now the term ‘Intellectual Property’ has a much wider meaning. IPR enhances technology advancement in the following ways, it provides a mechanism for handling infringement, piracy, and unauthorized use that provides a pool of information to the general public since all forms of IP are published except in the case of trade secrets. IP protection can be sought for a variety of intellectual efforts including-

- (i) Patents- A patent is awarded for an invention, which satisfies the criteria of global novelty, non-obviousness, and industrial or commercial application. Patents can be granted for products and processes.
- (ii) Industrial designs relate to features of any shape, configuration, surface pattern, the composition of lines, and colors applied to an article whether 2-D, e.g., textile, or 3-D, e.g., toothbrush
- (iii) Trademarks relate to any mark, name, or logo under which trade is conducted for any product or service and by which the manufacturer or the service provider is identified. Trademarks can be bought, sold, and licensed. Trademark has no existence apart from the goodwill of the product or service it symbolizes
- (iv) Copyright relates to the expression of ideas in material form and includes literary, musical, dramatic, artistic, cinematography work, audio tapes, and computer software
- (v) Geographical indications are indications, which identify as good as originating in the territory of a country or a region or locality in that territory where a given quality, reputation, or another characteristic of the goods is essentially attributable to its geographical origin.

Monika
Asstt. Professor ,Deptt.of Commerce

Need to Inculcate Healthy Eating Habits in Youth

Eating nutritious food is an important aspect of maintaining a healthy lifestyle. Heart disease, diabetes, high blood pressure, cancer, acidity, and other diseases are all prevented by eating a healthy diet. Healthy eating habits should be instilled in children and young people to promote healthy growth and cognitive development. But in the few past years, dietary patterns have been shifted from traditional health diets to unhealthy junk food due to increased manufacturing of processed foods, rapid urbanization and changing lifestyle. Children and adolescent are eating more foods that are heavy in energy, fats, free sugar and salt and many people aren't eating enough fruits, vegetables & dietary fiber like whole grains. A low-quality, high-junk food diet has a negative impact on not only our physical but also our mental health. Mental effects such as despair, rage, and anxiety induce hormonal imbalances in the body, making our bodies more reliant on junk food. Junk foods are high in sugars, calories, and fats, which contribute to obesity and overweight in today's youth. As a result, it is necessary to eliminate this dangerous diet and replace it with nutritious foods rich in fiber, vitamins, proteins, and other nutrients. Childhood, in my opinion, is the perfect time to instill proper eating habits. Parents can set an example for their children by eating nutritious foods and educating them about the benefits of home-cooked meals. They should urge their children to eat vegetables, fruits, legumes, wholegrains, and drink milk and juice, among other things. Some healthy eating habits include the following dos and don'ts: -

- Eat three times a day, with nutritious snacks in between.
- Drink water on a regular basis, 30 minutes before and after each meal.
- Prepare healthful meals at home.
- Eat a diet rich in proteins, fiber, and vitamins.
- Eat a healthy meal before going shopping to avoid eating junk food.
- Don't forget to have breakfast, and finish your last meal on time.
- Yoga, going to the gym, and playing any outdoor activity are all good examples of physical activities to engage in.
- Eat boiled rather than fried foods.

Shivani
Asstt .Professor
Deptt.of Commerce

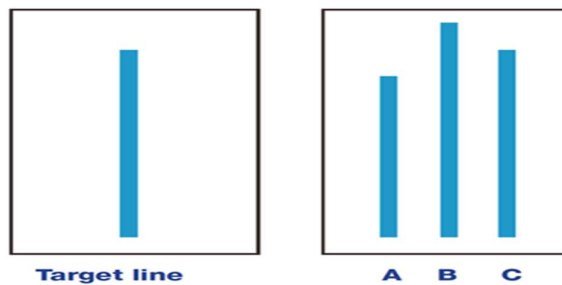
Influence: A Foe to Have a Relationship With

It's a beautiful day, it has just stopped raining and the college campus looks beautiful. Classes are in full swing, some students are enjoying their free lecture while others are heading towards their classes. Radhika wants to attend the lecture however, her friend is in no mood to attend the class that day so Radhika also changed her mood and did not attend the class. They both relish chai and samosa and enjoyed the weather.

Now, is Radhika's friend bad for not attending their lecture and influence Radhika to bunk her class or is Radhika not strong enough to assert her wish or is afraid that her friend will think of her as monotonous or bookish.

Well, let's understand the environment surrounding a student's life. They have friends, teachers, parents, siblings, social media influencers and many more that they constantly look upon and observe their behaviour. Due to these environmental factors, naturally they tend to perform certain activities that are against their wish or nature or likings. In order to impress their friends or influence their siblings etc., they perform activities that are not expected of them. Jonah Berger in his book "Invisible Influence: the Hidden forces that shape behaviour" have discussed the ways in which our behaviour is shaped by others and how people are struggling to remain different in a similar world. To quote "it is a little bit like goldilocks. We don't want to be the same as everybody else, but too different is also bad. We are trying to walk the line between being similar and different."

No age group is left unaffected by this struggle. Everyone at their workplace, at their homes, among friends, among colleagues, on social media is struggling not to break the thin line between getting easily influenced and having their own thoughts. According to the dictionary of psychology influence is any change in an individual's thoughts, feelings, or behaviors' caused by other people, who may be actually present or whose presence is imagined, expected or only implied. To explain further, let's understand the Asch conformity experiment; in this a group of eight male college students participated. Out of these eight, seven are paid actors and one is an actual participant. All eight participants are given same question to choose a line out of three lines A, B and C similar to target line as depicted in the image given below. All seven paid actors were directed to choose line B similar to target line. However, the eighth participant has to use his thoughts and select. The result of the experiment reflects that the eighth participant also choose line B as similar to target line. Thus, depicting that influence of people around us disturbs the decision making ability. There are various other experiments conducted and theories framed to support and prove the hypothesis that invisible influence affects the decision making ability.



You remember Radhika, the girl who bunk her class due to her friend's influence. Hence, we all live in an environment where invisible influence is leading our lives and affecting decision

making ability. The urge to impress others or be a part of the group affects the decision making ability. Though it is not suggested here that being a part of the group is wrong, as it is difficult to survive in isolation. But the point of this article is that how much influence of others is acceptable that it does not interrupt the decision making ability. The search is to look for a solution to have your own ideas, your own decisions and using this invisible influence in such a manner that is beneficial for a group as a whole.

As a student, you have to make various decisions in your life. Decisions like getting up in the morning, deciding to do self care, deciding to dress yourself, deciding to choose what time to reach college, deciding to learn something in college and deciding about your entire day. These decisions cannot be considered as small, they are as critical as deciding about marriage and family. All these environments impact your decision making ability. You may choose not to get affected by the particular environment but it has impact on your decision making ability. Social media marketing/Influencers have great impact on the decisions of the buyers. Companies are using these platforms to influence audience directly. Social media influencers through their indirect advertising affect the thinking ability of the consumer and students. According to UNICEF, 1 in 7 Indians aged 15 to 24 years feel depressed. Depression is linked to lack of self-esteem, poor concentration and other maladaptive symptoms, and can lead to difficulties in communication, failure to work or study productively, amplified risk of substance use and abuse, as well as suicidal thoughts. One of the key risk factors for these prevalent rates of depression is social media. All these environmental factors have direct as well as indirect influence on decision making abilities and impacting lives at large.

Let's face a fact that we cannot ignore this influence on us, but we can manage the impact of invisible influence by having a mindful relation with it. Any tool is as useful as you can make it. The most powerful tool to deal with invisible influence is to understand it, embrace it and think of ways to deal with it. There can be few methods by which you can manage this influence.

Accept it: If you are thinking that you are not easily influenced by others than you are wrong. So first step is to accept it, everyone is influenced by others in some or other way.

Understand it: Only when you accept your flaw is that you can change it or correct it. So you must try to understand the reason behind it.

Able to differentiate between good influence and bad influence: self awareness is the key to excel in life and live happily. If one is not self conscious, then he cannot understand other people's thoughts, their intentions and their vibrations.

Time management: Plan your day and activities. It will give you a better understanding of your goals and resources to achieve those goals. Study books on time management, reading books is the best therapy for self improvement.

Dr.Yogita
Asstt.Professor
Deptt. Of Commerce

बढ़ती बेरोजगारी

मूल रूप से बेरोजगार ऐसा व्यक्ति होता है जो काम करने के लिए तैयार है और एक रोजगार के अवसर की तलाश कर रहा है पर रोजगार प्राप्त करने में असमर्थ है। जो लोग स्वेच्छा से बेरोजगार रहते हैं या कुछ शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के कारण काम करने में असमर्थ होते हैं वे बेरोजगार नहीं गिने जाते हैं अन्य शब्दों में, बेरोजगारी उस समय विद्यमान कही जाती है, जब प्रचलित मजदूरी की दर पर काम करने के लिए इच्छुक लोग रोजगार नहीं पाते हैं।

बेरोजगारी आधुनिक समाज की एक मुख्य समस्या बन गई है। हमारे देश में भी यह बहुत तेजी से फैल रही है। यह एक गंभीर समस्या है जिसे दूर करने के लिए सक्षम नेतृत्व की आवश्यकता है। जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप बेरोजगारी हमें परिणामस्वरूप भेंट में मिल रही है। रोजगार के साधन तो सीमित हैं परंतु जनसंख्या बढ़ती जा रही है। बेरोजगारी भी अपने में कई प्रकार की होती है परंतु शिक्षित लोगों की बेरोजगारी अधिक कष्टप्रद होती है। प्रत्येक वर्ष विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों से विद्यार्थी एक बहुत बड़ी संख्या में रोजगार के क्षेत्र में कदम रखते हैं लेकिन बेरोजगारी के कारण उसे भीड़ में से कुछ प्रतिशत लोग ही जीविका प्राप्त करने में सफल हो पाते हैं।

बेरोजगारी के मुख्य 3 कारण हैं- सबसे पहला और मुख्य कारण जनसंख्या है, वर्ष और 1981-91 के दौरान भारत की जनसंख्या लगभग 16 करोड़ बढ़ी है और निरंतर बढ़ती ही जा रही है। दूसरा महत्वपूर्ण और मुख्य कारण हमारी शिक्षा प्रणाली है, हमारी शिक्षा प्रणाली व्यावहारिक और सैद्धांतिक है, जो विद्यार्थियों को किसी प्रकार की जीविका के लिए तैयार करने में सक्षम नहीं है। तीसरा मुख्य कारण यह है कि हमारे देश की जनसंख्या में तो निरंतर वृद्धि हो रही है लेकिन देश की औद्योगिक नीति और राष्ट्रीय आय उतनी ही धीमी पड़ती जा रही है।

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (CMIE) के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल, 2022 में बेरोजगारी दर 7.83 फीसदी हो गई है जो पिछले महीने 7.60 फीसदी थी। सबसे बुरा हाल तो हरियाणा का है जहां बेरोजगारी दर 34.5 फीसदी पर जा पहुँची है जबकि राजस्थान इस लिस्ट में 28.8 फीसदी के साथ दूसरे नंबर पर अपना स्थान लिए हुए हैं।

देश में जनसंख्या, महंगाई और गर्मी के साथ साथ बेरोजगारी भी बिना रुके दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। बेरोजगारी की समस्या के अंदर ही इसका समाधान निहित है। इसके लिए जनसंख्या को रोकने के उपाय, शिक्षा प्रणाली में सुधार और समाज का पुनर्निर्माण शामिल है। इस समस्या को काफी हद तक कम करने का एक कारगर उपाय बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहन देना है, औद्योगिकीकरण के विकास से ही रोजगार के अवसर बढ़ सकते हैं।

प्रगति मेहता

BA 3rd year

रोल नम्बर 3648220118

भारत का विदेशी व्यापार

INTRODUCTION :- विदेशी व्यापार वह व्यापार है जो एक देश से दूसरे देश के बीच होता है। एक देश से दूसरे देश को भेजी जाने वाली वस्तुओं को निर्यात कहा जाता है। उदाहरण के लिए भारत इंग्लैंड को चाय तथा जूट के सामान का निर्यात करता है। एक देश दूसरे देश से जो सामान मंगवाता है उसे आयात कहा जाता है। किसी देश में एक वर्ष में होने वाले वस्तुओं के आयात तथा निर्यात के अन्तर को व्यापार सन्तुलन कहा जाता है। इसके विपरीत एक वर्ष में सभी प्रकार की वस्तुओं सेवाओं तथा पूंजी के आयात और निर्यात के अन्तर को भुगतान सन्तुलन कहते हैं। वास्तव में व्यापार सन्तुलन भुगतान सन्तुलन का ही एक हिस्सा होता है। यदि किसी देश का निर्यात आयात से अधिक है तो व्यापार सन्तुलन अनुकूल होता है। इसके विपरीत यदि निर्यात आयात से कम होते हैं तो व्यापार सन्तुलन अनुकूल प्रतिकूल होता है।

IMPORTANCE OF FOREIGN TRADE :- प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था में विदेशी व्यापार का महत्वपूर्ण स्थान होता है। Robertson के अनुसार, "विदेशी व्यापार आर्थिक विकास का इंजन है।", विदेशी व्यापार का महत्व निम्नलिखित है:-

- 1) Full utilisation of natural resources: | - एक देश ऐसे उद्योगों की स्थापना एवं संचालन करता है। जिनसे उसे अधिकतम तुलनात्मक लाभ प्राप्त होता है। उस बाजार में अपनी उत्पादित वस्तुओं को बेचता है। जहां उसे वस्तु का सर्वाधिक मूल्य मिलता है। फलतः वह उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का सर्वोत्तम उपभोग करता है।
- 2) Availability of foreign exchange: | - विदेशी व्यापार विदेशी विनिमय को अर्जित करने की सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है।
- 3) Revenue to the govt: | - विदेशी व्यापार के कारण सरकार को भारी मात्रा में आयात व निर्यात कर लगाकर राजस्व की प्राप्ति होती है।
- 4) Encouragement to Industrialisation: | - विदेशी व्यापार के माध्यम से देश में उद्योग धंधों को विकसित करने के लिए आवश्यक उपकरण, कच्चा माल व तकनीकी ज्ञान सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं। फलतः देश में औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

IMPORTANCE OF IMPORT AND EXPORT FOR INDIAN ECONOMY: | - भारत की अर्थव्यवस्था के लिए आयातों और निर्यातों का निम्नलिखित महत्व है:-

IMPORTANCE OF IMPORT

- 1) TO MEET SHORTAGE OF ESSENTIAL CONSUMER GOODS: | भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी अनिवार्य उपभोक्ता वस्तुओं जैसे, खाद्यान्न, खाने का तेल, चीनी आदि की कमी को आयातों द्वारा पूरा कर सकती हैं।
- 2) TO OBTAIN IMPORTANT INPUT: | - भारत को अपने उद्योगों तथा कृषि विकास के लिए महत्वपूर्ण आगतों जैसे पेट्रोल, रासायनिक खाद, खनिजों आदि की आवश्यकता होती है। अतः इनकी कमी को आयातों द्वारा पूरा किया जाता है।

IMPORTANCE OF EXPORT :-

- 1) EXPORT OF SURPLUS PRODUCTION: | - भारत में कई वस्तुओं जैसे चाय, पटसन आदि का उत्पादन घरेलू आवश्यकता से अधिक होता है।

इन वस्तुओं का विदेशों को निर्यात

करके ही बड़े तथा लाभदायक पैमाने पर उत्पादन करना संभव होता है।

2) TO OBTAIN FOREIGN EXCHANGE: | -भारत को अपने आयातों को प्राप्त करने के लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता होती है। यह विदेशी मुद्रा निर्यातों के बदले में ही प्राप्त किया जा सकता है।

Main Imports and Export in India : | -भारत लगभग 7500 वस्तुओं का निर्यात तथा आयात करता है। भारत के आयात तथा निर्यात निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं। भारत के मुख्य आयात तथा निर्यात निम्न हैं।

Chief items of Import : | -

1) Machinery 2) Iron and steel 3) Petrol and Petroleum product 4) Transport equipment 5) Food grains etc

MAIN ITEMS OF EXPORT : | -

1. CLOTH and Apparels

2. TEA

3. Jute products

4. SPICES 5) GEMS AND JEWELLERY etc

Aman
Class -B.A

Social Sciences

Gender quotas in Gram Panchayats in India

In most countries, women are still denied basic social, economic, and political rights. India is not an exception. Indian women have been denied an independent role in decision making and the culprit has been a deeply entrenched patriarchal value system that has been influencing Indian culture and social ethos. Even though regional variations do exist in terms of the impact of patriarchal values in the sense that north India is more notorious for being more patriarchal yet south India is not completely free from its influence. The decisions by women in India have been influenced by the commands of the male members of the family. Therefore, patriarchy is a social system where cultural and social norms give preference to men and put restrictions on opportunities for women and all social, economic, and political power is vested in men. However, social justice, democracy, and human development call for an egalitarian society based on gender equality. One of the most important prerequisites for a democratic and egalitarian country is the participation of its women in politics and her representation in other decision-making bodies. Women's representation in political decision-making is significant from both normative and practical aspects. Normatively, it would ensure representation of almost 50% of the population in the decision-making process and practically it would ensure that policies and decisions are not made from the male perspective only and would also take care of the interests of women.

The pathetic position of women and to achieve gender equality, a movement towards women empowerment was initiated in most countries including India. Indian women have come a long way as far as political leadership and decision-making is concerned. The movement towards political empowerment of Indian women started with participation in India's freedom struggle and then in numerous social moments after independence. The effort was further carried forward with much vigour and conviction in post-independent India. The most critical decision for women's political empowerment was the passage of the 73rd and 74th Amendments Acts which provided gender-based reservation in institutions of local self-governance.

Introducing women in politics at grassroots levels through gender quotas was a farsighted and revolutionary step. Experiences from the performance of gram panchayats from all over India have manifested the positive impact of the reservation of seats for women. It has transformed women's perceptions about themselves. They have gained self and social respect, have been able to exercise leadership capabilities, have participated in developmental decisions and policymaking bringing about qualitative and inclusive changes in the lives of rural masses. Women representatives in particular and SC/ST women representatives, in general, have shown signs of assertiveness in a male-dominated society.

Despite many achievements, there are still many obstacles in achieving political empowerment of women through reservation in local bodies. Indian society is still dominantly a patriarchal society. Patriarchal values cut across all the sections, regions, and religions of the society. Women and EWRs both face staunch resistance from both men and women alike. It is because patriarchy has been internalized by both sexes. The situation is worse for women belonging to marginalized sections like SC and ST. Instances of violence, sexual abuse, and intimidations are still rampant to contain women from entering into local politics. Illiteracy, lack of knowledge and awareness, lack of self-confidence, and casteist mindsets are other impediments. Besides social constraints, many institutional constraints are also being used to keep women out of political decision-making processes. Thus, there is a need to introduce corrective mechanisms.

A coordinated and integrated strategy that includes all the stakeholders is a fundamental requirement. The strategy has to be implemented both at the cognitive and technical levels. There is a need for massive value transformation in Indian society wherein the traditional patriarchal mindset is replaced by a more egalitarian and rational value system. People, including women, need to be gender sensitized. The overall literacy status, particularly female literacy status has to be improved. The entire Education system needs an overhauling. Education must ensure that new democratic, secular, and rational values are imparted to students. Besides, other reforms that need to be undertaken include cutting down of the intervention of political parties in the functioning of panchayats, elections should be conducted fairly, generation of political awareness among rural women, organization of special training and refresher courses for women representatives, recognition of the contribution of women representatives and special incentives for them and broadcasting the same. Also, the time has come to raise the ratio of reserved seats for women in local institutions. Times have changed since 1992. Women representatives in gram panchayats have displayed their calibre, society has evolved, literacy status is improving, and by and large appreciation and acceptance of women's political role are there. An increase in seats for women will give a further impetus to the socio-economic and political empowerment of women.

To conclude, mere gender quotas and technical patchwork will not lead to women's political empowerment. The fundamental hindrance in the way of women's empowerment, in general, is the patriarchal value system which has to be eradicated from the minds of Indian people. It will take time as value transformation is a gradual process. Indian society is changing and eventually, we will witness holistic empowerment of women in the coming future.

Rajat Soni
Assistant Professor
Deptt. Of Public Administration

Rising Food Prices in India

The official estimates of the Government of India, on the state of inflation in the economy during February 2022, has confirmed the fears of rising price spectre. Both the Consumer Price Index (CPI) and the Wholesale Price Index (WPI) showed high and rising annual inflation rates of 6.07 per cent and 13.11 per cent, respectively. The inflation at the food level was also high at 5.9 per cent and 8.5 per cent, respectively. India's central bank, the RBI, has been given the mandate to maintain annual inflation at 4 per cent until 31 March 2026 with an upper tolerance limit of 6 per cent. Nearly all the four inflation rates are either higher or closer to RBI's upper limit.

The CFPI, or consumer food price index, stood at 5.9 per cent in February 2022 and was driven up mainly by inflation in edible oils, vegetables, cereals and livestock products, including milk, meat and fish. Apart from the seasonality effect where, generally, the prices tend to rise in the summer months, mainly for vegetables and dairy, the global contagion of high edible oil prices is behind most of the inflation we are observing in domestic markets of these oils. Higher feed costs, mainly from maize and soymeal, are also pulling up inflation in the livestock sector.

With supply disruptions from the Ukraine-Russia war on mainly four accounts including wheat, sunflower oil, fertilisers, and maize, continued price pressures are likely to stay at least for these crops. High global prices reflect in domestic markets, generally with a lag and mostly via three routes. One, high global prices offer lucrative export opportunities that reduce the domestic availability of a crop, thereby pulling up its prices in domestic markets. Two, dependency on expensive imports, like in the case of edible oils, facilitates the domestic contagion of high global prices, and three, inter alia, the high cost of imported inputs like fertilisers increases the cost of cultivation, leading to the pulling up of crop prices in domestic markets.

Climate change is another important impact on our food system. The impact is even more on an agrarian economy like India, which is creating ripple effects on the entire food production chain. The harm caused to agriculture and food security by the ongoing heatwave is multi-dimensional. It affected the wheat crop and the food supply, prompting a phenomenal rise in the price of wheat products. The loss to wheat is both qualitative (the low output) as well as

quantitative (the grain is also of poor quality). It should be seen in the light of the fact that food security is as much about the quantity of food, as it is also related about the nutritional value. Higher temperatures, shifting seasons, changing precipitation patterns, sea-level rise, and growing frequency and intensity of extreme weather events such as droughts, floods, extreme heat, and cyclones are the key factors in reducing agricultural productivity, disrupting food supply chains, and displacing communities.

The Global Food Policy Report 2022 by the International Food Policy Research Institute has warned that climate change may push many Indians towards hunger by 2030 due to a decline in agricultural production and disruption in the food supply chain. The report notes that globally, around 65 million people are at risk due to climate change-induced hunger, with 17 million people in India facing hunger by 2030, the highest among all countries. The report further states that although global food production may increase by 60 per cent by 2050, 50 crores of Indians would still be at the risk of going hungry. Of these 50 crores, seven crore people would suffer from hunger due to climate change.

Now the world needs to rethink, what kind of food systems we require to have for the future. In a country like India, millions of households will be affected with each wrong decision. We would have to redesign our economic system, current system is not sustainable, we should have adopted agroecology to get from a green to an evergreen revolution which could make agriculture healthy and farmer wealthy. There is an urgent need to slow emissions today to prevent those future consequences.

Dr. Punam
Assistant Professor
Deptt.of Economics

"बढ़ते कदम भारत के"

एक लंबे अंतराल के पश्चात विश्व में भारत आज पुनः अपने वैभव, गौरव, ओज, तेज, शक्ति, संपन्नता, प्रभाव, उन्नत सभ्यता एवं संस्कृति, शांति व्यवस्थापक, वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में दिखलाई पड़ रहा है, जो कि भारत के लिए ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व के लिए अहम् महत्व रखता है। इतिहास गवाह है समृद्ध एवं प्रभावशाली भारत ही वैश्विक शांति, समानता, समृद्धि, उन्नति की स्थापना कर सकता है। वर्तमान में भारत ने एक ओर जहां महामारी काल में विकसित राष्ट्रों से भी बढ़कर वैश्विक स्तर पर भूमिका अदा की, वहीं अनेक राष्ट्रों के साथ मिल भिन्न-भिन्न समूहों का निर्माण किया, जो आज कहा जाए तो संयुक्त राष्ट्र संघ से भी अहम् भूमिका निभा रहा है। वैश्विक सामंजस्य की स्थापना में अपनी अहम् भूमिका अदा की है।

भारत की स्वतंत्र एवं निष्पक्ष विदेश नीति आज विश्व को एक नई दिशा प्रदान कर रही है। किसी एक पक्ष में न रहकर भारत आज भिन्न-भिन्न समूहों का निर्माण कर शक्ति संतुलन बनाए हुए है। अनेक विकासशील राष्ट्र जहाँ आज अपने यहाँ सत्ता संघर्ष एवं अराजकता से जूझ रहे हैं, वही भारत के बढ़ते कदमों के कुशल नेतृत्व के परिणामस्वरूप भारत आज विकसित राष्ट्रों से भी अहम् पायदान पर खड़ा है। संपूर्ण विश्व भारत से एक उम्मीद बनाए हुए है। परमपिता परमात्मा भारत के इन बढ़ते कदमों को तीव्र गति प्रदान करें।

सुमन देवी
सहायक प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग

हमारा समाज एक पिंजरा

समाज की वह परंपराएं जो हमारे लिए अभिशाप है। हम जिस समाज में रहते हैं। वह समाज हमारे बारे में क्या सोचता है। हर नारी समाज को बनाती है

और फिर वही समाज उस नारी के लिए समस्या बन जाता है। नारी से फिर भी समाज एक मशीन जैसा व्यवहार करता है। जो केवल उसके द्वारा चलाई जाती है। तथा काम ना देने पर उसको एक घर के एक कोने में नष्ट होने के लिए छोड़ दिया जाता है। क्यों कोई यह नहीं समझ पाता कि वह औरत एक मशीन नहीं है। बल्कि उसमें भी जान प्राण है। जब एक नारी एक समाज में पैदा होती है। उस समाज में मर जाने तक उसकी औकात केवल वस्तु जैसी क्यों होती है। जब वह छोटी होती है। अपने पिता से पढ़ाई की मांग करती है। तब उसे वह मांग पूरी करने की अनुमति इस बात पर मिलती है।

"ठीक है जब तक तुम्हारे लिए कोई अच्छा वर नहीं मिल जाता तब तक तुम पढ़ लो" यह क्या है। ? क्यों कभी एक पिता उस बेटी को जन्म से यह नहीं सिखाता है। कि तुम्हें अपने पैरों पर खड़ा होना है। और धकेल दिया जाता है उसे उन बंधनों में जिसे वह भी चाहती नहीं थी। शादी के बाद क्यों एक नारी हमेशा अपनी खुशियों का गला घोट कर दूसरों की खुशियों में खुश रहना सीख लेती है। क्यों कभी अपने लिए कोई मांग नहीं करती। क्योंकि समाज हमें बचपन से यही सिखाता है। दूसरों की खुशी में खुश होना ही औरत की सबसे बड़ी पहचान है। पर यह कोई परवरिश नहीं बल्कि अत्याचार है। और जो महिला इसके विरुद्ध खड़ी हुई होती है विरुद्ध खड़ी हुई होती है अपने पति से अपनी खुशियों की मांग करती है तो क्यों समाज उन खुशियों को केवल शारीरिक खुशी तक सीमित देता है क्यों कभी उसकी उन बजाओ को नहीं देखा जा सकता जो उसके लिए जरूरी है जैसे इज्जत सम्मान इस तरह की स्त्रियों को समाज चरित्रहीन करूर और ऐसे ऐसे नाम दिए जाते हैं जिन्हें लिखना तो क्या बोला तक नहीं जा सकता। क्यों आवाज उठाने वाली स्त्री को समाज बेइज्जत करने में लगा होता है। क्यों हमेशा एक स्त्री जन्म से लेकर मरने तक वही करती है। जो समाज उसे करने के लिए कहता है। क्यों कभी समाज बनाने वाली नारी को यह समाज इज्जत नहीं दे पाता। (मैं इस कहानी को लिखना नहीं चाहती थी मुझे लगता था कि अब समाज बदल गया है पर यह समाज तब तक नहीं बदलेगा। जब तक हम नहीं बदलेंगे। अपने प्रति हर क्रूरता का जवाब देना सीखो क्योंकि यह जवाब केवल हमारा नहीं बल्कि उन सभी स्त्रियों के लिए मिसाल बनेगा जो हम जैसी जिंदगी जी रही हैं।

Komal Goyal
Class -BA 1st year
Roll No. 42

🌸 आओ पक्षियों से कुछ सीखें 🌸

1. रात को कुछ नहीं खाते। 🐦
2. रात को घूमते नहीं। 🐦
3. अपने बच्चे को सही समय पर सिखाते हैं। 🐦
4. ठूस ठूस के कभी नहीं खाते। आप ने कितने भी दाने डाले हों, थोड़ा खा के उड़ जायेंगे।
साथ कुछ नहीं ले जाते। 🐦
5. रात होते ही सो जायेंगे,
सुबह जल्दी जाग जायेंगे,
गाते चहकते उठेंगे। 🐦
6. अपना आहार कभी नहीं बदलते। 🐦
7. स्वयंम्वर से जीवनसाथी चुनेंगे। 🐦
8. अपने शरीर से सतत काम लेते हैं।
रात के सिवा आराम नहीं। 🐦
9. बीमारी आई तो खाना छोड़ देंगे,
तभी खायेंगे जब ठीक होंगे। 🐦
10. अपने बच्चे को भरपूर प्यार देंगे। 🐦
11. परिश्रम करने से हृदय, किडनी,
लिवर के रोग नहीं होते। 🐦
12. प्रकृति से उतना ही लेते हैं जितनी
जरूरत है। 🐦
13. अपना घर पर्यावरण अनुकूल बनाते हैं। 🐦
14. अपनी भाषा छोड़कर दूसरों की बोली
नहीं बोलते। 🐦

बहुत ही शिक्षाप्रद !

हम भी इनसे कुछ सीखें तो जीवन सरल,
सुंदर व सफल हो जाए।

Inflation

Rise and fall in the price of any commodity in the market is a common process. But whenever the prices of any goods go higher and the prices go up so much that it seems impossible for the general public to buy those things then this situation is called an inflationary situation. Due to this, there is a sudden stir in the economy which becomes difficult to control.

"Inflation is simply a persistent and appreciable rise in the general price level."

The main cause of inflation is high demand for goods and services and there is not enough production to fulfill the demand. In such a situation, due to a shortage of goods in the market, the prices suddenly start skyrocketing and are out of reach of the general public. Environmental factors also affect the prices of goods. For instance, we can see the prices of grain and vegetables going up because the production of grains was affected in this year due to the environment, raise in price directly affects the real income of the general public. Apart from this, some traders or sellers create an artificial shortage of goods. There is actually not as much shortage of goods in the country as we see, the biggest reason for this is that some people deliberately store the goods, due to which there is a shortage of goods created in the market and the prices of those goods increase very much and make them more profitable than usual. After this artificial shortage, the economy falls into a state of inflation.

We can see a glimpse of the huge losses in the economy due to inflation recently in Sri Lanka. The main causes of inflation in Sri Lanka's economy are major structural weakness, contraction of trade as a percentage of GDP, low level of FDI, declining tax revenue by the government, and a failure to diversify export destination and sector. Apart from this, the government's abrupt switch to ORGANIC FARMING is also a major cause of inflation in Sri Lanka. Suddenly the result of adopting organic farming without any plans was that the economy was completely shaken. The prices of goods increased too much that even the people were unable to buy the goods and the entire economy fell apart.

The government of the country should make new policies to control prices so that sustainability in the prices can be achieved and situation of inflation doesn't arise in the economy or the old policies should be reformed so that the economy remains rock free from any damage caused by inflation and the economy remains strong.

Reshma
B.com CAV 1st Year (Economics)

POETRY FOR TEACHER

- वो अपने ज्ञान की ज्योति से,
घर घर ज्ञान का दीपक जलते हैं |
जो बच्चों को पाठ-पढ़ाते हैं,
वो राष्ट्र निर्माता कहलाता है |
- कभी डाँट कर कभी प्यार से,
बच्चों की गलती उन्हें बताते हैं |
जो बच्चों को अनुशासन सिखाते हैं,
वो एक अच्छे शिक्षक कहलाते हैं |
- अज्ञानता के काले बादल घटाकर,
बच्चों में ज्ञान कि रौशनी फैलाते हैं |
जो सदैव सत्य मार्ग पर चलना सीखते हैं,
वो ही असली पथ-दर्शक कहलाते हैं |
- ज्ञात-पात से उपर उठकर,
इमानदारी, त्याग सहनशीलता सिखाते हैं,
जो अच्छे समाज का निर्माण करके हैं,
वो जग में आदर्श शिक्षक कहलाते हैं |
- खुद तप कर,
कुंदन दुसरो को बना जाते हैं |
जला कर अपने हाथों को भी
उजाला दूर तक बाँट जाते हैं |
- शिक्षक हैं वो व्यापारी हैं,
बिना किसी मोल के जीने का सलीका सिख जाते हैं |
- बच्चों का वह भविष्य बनाते हैं,
सभी बच्चों को एक समान ज्ञान बाँटते हैं |
- जब करता है कोई बच्चा गलती
आगे न करे इसलिए शिक्षक उसे डाँटते हैं |
- शिक्षक तो ज्ञान का भंडार होते हैं,
तभी तो वह ज्ञान को बाँटते हैं |
- ज्ञान के दीप जला जो हमें संस्कार सिखाते हैं,
वह शिक्षक होती कहलाते हैं |
- चुनौतियों से लड़कर जो हमें आगे बढ़ना सिखाते हैं,

- वह शिक्षक होती कहलाते हैं ।
- हर कदम पर जो हमें सफलता का मार्ग दिखाते हैं,
वह शिक्षक होती कहलाते हैं ।
 - सही और गलत की जो पहचान करते हैं,
वह शिक्षक होती कहलाते हैं ।
 - भाग्य के भरोसे न बैठे हो जो हमें मेहनत करना सिखाते हैं,
वह शिक्षक होती कहलाते हैं ।

Amanshu Aggarwal
B.Com Final Year
Roll No. 3648320009

जीवन

जिस राह से गुजरे हम,
एक नाम सुना जीवन,
थके हुए रहो ने कहा,
एकता ही है जीवन ।
गरीबों में तड़पते हुए इंसान ने कहा,
प्यार ही जीवन ।
मगर कोई हमसे भी पूछे,
कि क्या है । जीवन ?
ठोकर खाकर सभलने का,
नाम ही है । जीवन

Mandeep Kaur
Class - B.Com 6th Semester
Roll No. 45

सोच

“हमारी आज की सोच ही हमारा भविष्य निर्धारित करती है”

हमारे जीवन का आरंभ विद्यार्थी काल से होता है विद्यार्थी जीवन में हम बहुत कुछ सीखते हैं लेकिन असल में सीखना क्या है यह हमारे ऊपर निर्भर करता है इसलिए हमें केवल अच्छी चीजों, अच्छे विचारों को ही अपने जीवन में शामिल करना चाहिए क्योंकि जितना आज अपने जीवन सकारात्मक को अपनाते चले जाते हो आपके कदम कामयाबी की तरफ बढ़ते चले रहे जाते हैं विद्यार्थी के लिए आवश्यक है कि वह खुद पर भरोसा करें | क्योंकि जीवन में किसी की ऊंचाई तक पहुंचने के लिए हमारी उम्र और विश्वास होना बहुत जरूरी है विद्यार्थी लड़का हो या लड़की दोनों को चाहिए की उचित शिक्षा ग्रहण करके वह अपनी मंजिल पर पहुंचकर जितनी खुशी उन्होंने हमें दी है हमारा भी फर्ज है उन्हें खुश रखने का क्योंकि माता-पिता की वजह से ही हम सभी में इतनी अच्छी जिंदगी को जिया है उतार-चढ़ाव हर व्यक्ति के जीवन में आते हैं तो इन से घबराएं नहीं क्योंकि यह उतार-चढ़ाव ही व्यक्ति को हीरा बनाते हैं

Princi Chauhan
B.Com Final Year
Roll No. 33

मंजिल

- लोग कुछ भी बोले तो दिल पर मत लगा.....
के लोग कुछ भी बोले तू दिल पर मत लगा,
हिम्मत करके कुछ बन और उनके मुंह बंद करके दिखा |
- मंजिल पर चलते हुए पीछे ना देख
तुम्हें बहुत दूर जाना है
और जिन्होंने हाथ भी मिलाने से मना किया था
उन्हीं से सलूट मरवाना है |
- जो तकलीफ नहीं सुन रहे आज तुम्हारी
एक दिन वही तुम्हारी तारीफ सुनाएंगे,
तुम एक बार कामयाब तो हो जाओ
ये लोग जी हज़ूर जी हज़ूर कह कर बुलायेंगे |
- आसमानों को छू तो कुछ बनने का इरादा रख
आज हारा है तो कल जीतेगा जरूर

बस अपनी उड़ान पर मत एक शक |

- आज गिरा है कल संभले का जरूर
के आज गिरा है कल संभले का जरूर
तू उठ और हिम्मत तो कर
एक दिन कुछ बनेगा जरूर |
- जो बोल मां-बाप ने सिखाए,
वो कभी बेकार नहीं होते,
और यहां खुद के लिए खुद ही करना पड़ता है
असली जिंदगी में चमत्कार नहीं होते |
- पानी रोज देना पड़ता है
फूल ऐसे ही नहीं खिलते
एक दिन में सक्सेस नहीं मिलेगी
लेकिन एक दिन जरूर मिलेगी सबर कर
सक्सेस का कोई वरदान नहीं मिलता |
- अपने दम पर कुछ कर
तुझे कोई टॉक नहीं पाएगा,
और जिस दिन तुम्हें हालातों को बदलना सीख लिया
तुझे कोई तूफान रोक नहीं पाएगा |
- वो कभी कामयाब नहीं होते
जो लोग मेहनत से डरते हैं
और लोग क्या कहते हैं
तू छोड़
पत्थर अक्सर बड़े पेड़ को ही बदलते हैं

Priyanka Devi
B.Com Final Year
Roll No. 3648320015

मां बाप का नाम चमकाना है

- जिंदगी की इस दासता में
कुछ तो करके दिखाना है |
भगवान पर रख भरोसा
मेहनत पर ध्यान लगाना है
दुनिया में मैं आई थी खाली
जाते-जाते मां बाप का नाम चमकाना है
- नहीं पता सही गलत मुझे
माना रास्ता अनजान है |
हूँ अभी किनारे पर
समंदर पर कर मुझे जाना है
भगवान पर रख भरोसा
मेहनत पर ध्यान लगाना है
- नहीं आती मुझे नींद में सपने
मेरी खुली आंखों में सपना सुहाना है |
अपने सपने को पाने के लिए
हर दौर से गुजर जाना है
भगवान पर भरोसा
मेहनत पर ध्यान लगाना है

shivanshu
B.Com Final Year
Roll No. 3648320049

दोस्ती

“यारा दिया यारियां नू पहल है”

यह सही है कि अनेक लोग हमारे संपर्क में आते हैं जिनमे से कुछ लोगों के प्रति हम आकर्षित हो जाते हैं और वह भी हमारी ओर आकर्षित हो जाते हैं फिर उनसे ऐसा रिश्ता शुरू होता है जिसे हम दोस्ती का नाम देते हैं अब हम सबके मन में यह ख्याल आएगा आखिरकार दोस्ती है क्या ?

“जिसकी कोई परिभाषा नहीं होती है”

वो है दोस्ती !

“जिसकी कोई सीमा नहीं होती है”

वो है दोस्ती !

कभी रूठना तो कभी मनाना है दोस्ती

छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ाना है दोस्ती

हजारों बार झगड़ के एक साथ रहना है दोस्ती

दोस्त वो हैं जिनसे हम अपना हर-सुख-दुःख बांटते हैं दोस्त वो है जो हमारी खुशियों में हमसे ज्यादा खुश और दुखों में हमसे ज्यादा दुखी होते हैं अच्छे दोस्त अच्छी बुरी परिस्थितियों में हमेशा साथ रहते हैं ।

“आज के दौर में लोग प्यार में पागल है और हम दोस्ती में और नशा भी कमबख्त इस कदर छाया है कि अब रुह भी डूबेगी तो साथ किशती में”

“कौन कहता है दोस्ती बराबर वालों से होती है”

मैंने तो सुदामा और कृष्णा की दोस्ती भी सुनी है

दोस्ती ईश्वर का वह उपहार है तो जिंदगी के साथ भी जिंदगी के बाद भी अच्छे दोस्त किस्मत वालों को मिलते हैं उन्हें हमेशा अपने दिल के पास रखे हैं मैं कुछ लाए अपने दोस्तों को dedicate करती हूँ
By God जिंदगी च यारी न हुंदी

बड़े फीके जे स्वाद होने सी

इकट्ठे पढ़े इकट्ठे लड़े कट्ठे आ न कांड

करे दिन कीवे याद होने से !

जिंदगी में अच्छे दोस्त कभी मत खोना अच्छे दोस्त खोना किसी अनमोल खजाने के खोने के बराबर हैं जिंदगी में अच्छे सच्चे ईमानदार व निस्वार्थ भाव से आपका भला चाहने वाले दोस्त मिलने पर भगवान से हमेशा धन्यवाद करे

पर्यावरण

पर्यावरण शब्द का निर्माण 2 शब्दों परि और आवश्यक से मिलकर बना है जिसमें “परि” का मतलब है हमारे आसपास या जो हमारे चारों ओर है और ‘आवरण’ जो हमें चारों ओर से घेरे हुए हैं पर्यावरण सभी भौतिक रासायनिक एवं जैविक कारकों की कुल इकाई है जो किसी जीवधारी या परी तांत्रिक आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप जीवन और जीविता को तय कहते हैं संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित यह दिवस पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनीतिक और सामाजिक जागृति लाने के लिए मनाया जाता है इसकी शुरुआत 1972 में 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन से हुई 5 जून 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया पर्यावरण के जैविक संगठनों में सूक्ष्म जीवाणुओं से लेकर कीड़े मकोड़े सभी जीव जंतु और पेड़ पौधों के अलावा उनसे जुड़ी सारी जेब पर्याय और प्रक्रियाएं भी शामिल हैं जबकि पर्यावरण के जैविक संघट को मे जैविक तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रिया में आती हैं जैसे पर्वत चट्टाने नदी हवा और जलवायु के तत्व इत्यादि सामान्य अर्थों में यार हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्व तत्व प्रक्रिया और घटनाओं से मिलकर बनी है यह हमारे चारों ओर व्याख्या है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी पर निर्भर करती है और संबंधित होती है मनुष्य द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियाएं पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं इस प्रकार किसी जीव और पर्यावरण के बीच का संबंध भी होता है जो कि अन्योन्याश्रित है मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बांटा जा सकता है जिसमें पहला है प्राकृतिक क्रिया न सिर्फ पर्यावरण और मानव विनीत पर्यावरण पर्यावरण यह विभाजन प्राकृतिक प्रक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और निर्मिता के अनुसार है पर्यावरण समस्या जैसे प्रदूषण जलवायु परिवर्तन इत्यादि मनुष्य को अपने जीवन शैली के बारे में पूर्ण विचार के लिए प्रेरित कर रही है और अब पर्यावरण सुरक्षा और पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता महत्वपूर्ण है आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत है पर्यावरण संकट के मुद्दे पर आम जनता और सुधि पाठकों के जागरूक करने की उड़ाया इससे दिल तो लगाओ इसकी शोभा को थोड़ा सा और बढ़ाओ पेड़ ना काटो तुम पौधे लगाओ तुम पर्यावरण की सुंदरता में चार चांद लगा हो तो मैं हूं ज्यादा भले मेहनत करनी पड़ेगी ज्यादा तो बस खोद के थोड़ा गहरा गड्ढा बनाओ और उसमें एक प्यारा सा पौधा लगाएं।

Manisha
B.Com Final Year
Roll No. 3648320048